Pinku Pradhan

कौन कहता है कर्ण कुन्ती का पुत्र था?

(ऐतिहासिक अनुसन्धान)

लेखक :

यशपाल आर्य

सम्पादक :

लाजपत राय अग्रवाल
(वैदिक मिशनरी)

प्रकाशक

अमर स्वामी प्रकाशन विभाग

१०५८, विवेकानन्द नगर, गाजियाबाद- २०१००२ (उ.प्र.)

E-mail : lajpatraiaggarwal1058@gmail.com

Website: www.amarswamiprakashanvibhag.com

Ph. : 0120-2701095, 0120-2700042, 09910336715, 09871230321, 09810816715

जनवरी सन् २०१५ ई० द्वितीय संस्करण मूल्य : पचास रुपया

मुख्य वितरक : अतुल बुक एजेन्सी, गाजियाबाद

Pinku Pradhan

© : अमर स्वामी प्रकाशन विभाग

प्रकाशक : अमर स्वामी प्रकाशन विभाग
१०५८, विवेकानन्द नगर, गाजियाबाद-२०१००२
(उत्तर प्रदेश) भारत
: (०१२०) २७०१०६५, (०१२०) २७०००४२
चलभाष : ०९९१०३३६७१५, ०९८१०८१६७१५
द्वितीय संस्करण : जनवरी, २०१५ ई.
मूल्य : पचास रुपये
लेखक : यशपाल आर्य, देहरादून (उत्तराखण्ड)
सम्पादक : लाजपत राय अग्रवाल (वैदिक मिशनरी)
मुद्रक : आशा ऑफसैट प्रिंटिंग प्रैस, गाजियाबाद
शब्द संयोजक : अमर स्वामी कम्प्यूटर सेंटर, गाजियाबाद
भ्रमण ध्वनि क्रमांक : ०९९१०३३६७१५

नोट : भारत भर में हमारे सभी वितरकों के पास उपलब्ध है।

Kaun Kahta Hai Karn Kunti Ka Putra Tha?

Author : Yashpal Arya
Published by : Amar Swami Prakashan Vibhag
1058, Vivekanand Nagar, Ghaziabad-201001 (U.P.)
India
E-mail : lajpatraiaggarwal1058@gmail.com
Website: www.amarswamiprakashanvibhag.com

January 2015 Second Edition Price : Rs. 50/-

Ph. : 0120-2701095, 0120-2700042, 09910336715, 09871230321, 09810816715

Pinku Pradhan

विषयानुक्रमणिका

Pinku Pradhan

आवश्यक दृष्टव्य्

आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान् इतिहास के मर्मज्ञ प्रसिद्ध शास्त्रार्थ महारथी श्री अमर स्वामी जी महाराज द्वारा लिखित खोजपूर्ण साहित्य की संक्षिप्त जानकारी–

1. कौन कहता है द्रौपदी के पांच पति थे?
2. हनुमान आदि वानर बन्दर थे या मनुष्य?
3. क्या रावण वध विजयदशमी को हुआ था?
4. क्या जटायु पक्षी था?
5. क्या रावण के दस सिर बीस हाथ थे?

विशेष जानकारी के लिए प्रकाशन से वृहद् सूची पत्र मंगायें-तथा उपरोक्त पुस्तकें प्राप्त करें।

सम्पर्क सूत्र : अतुल गुप्ता, ०९८७१२२३०३२१

Pinku Pradhan

लाजपत राय अग्रवाल
(वैदिक मिशनरी)

सम्पादकीय

मेरा परिचय लेखक एवं उनके परिवार से लगभग ४४ वर्ष पुराना है, सन् १९७० ई० में आर्य समाज धामावाला-देहरादून का वार्षिकोत्सव था, मैं विद्यार्थी रूप में आर्य समाज के प्रसिद्ध शास्त्रार्थ महारथी श्री अमर स्वामी जी महाराज के साथ उस उत्सव में शामिल हुआ था। मैंने वहां देखा कि आदरणीय श्री यशपाल जी स्वयं एवं उनका पूरा परिवार उस समाज के उत्सव में ऐसे भाग ले रहा था जैसे कि मानो इनके परिवार का अपना स्वयं का कोई कार्यक्रम हो। मेरे ऊपर उस बात का बहुत ही गहरा प्रभाव पड़ा।

श्री यशपाल जी आर्य के अतिरिक्त श्री बाली जी, श्री अनूप सिंह जी आदि-आदि अनेकों व्यक्ति उस कार्यक्रम में बढ़-चढ़ कर भाग ले रहे थे, समाज के उत्सव में आगन्तुक बक्ताओं में भी एक से एक उद्भट विद्वान मौजूद थे, यथा कुँवर सुखलाल आर्य मुसाफिर, स्वामी समर्पणानन्द जी महाराज, पण्डित प्रकाशवीर शास्त्री, जिनकी संसद में उस समय तूती बोलती थी, आर्य समाज मन्दिर के प्रांगण एवं सड़क पर दूर-दूर तक श्रोताओं की इतनी भीड़ एकत्रित होती थी कि सुरक्षा कर्मियों की मदद लेनी पड़ती थी।

श्री यशपाल जी जो स्वाध्याय में बड़ी रुचि रखते थे, जबकि इनका अपना व्यवसाय भी अच्छे उच्च स्तर का था, परन्तु उसमें से भी समय निकाल कर वैदिक ग्रन्थों का स्वाध्याय करना, विद्वानों से

Pinku Pradhan

सवाल-जवाब करना, श्रोताओं में उद्‌बोधन देना, समाज के कार्यों में सर्वाधिक रूप से भाग लेना इनका एक स्वभाव सा बन गया था।

कालान्तर में इनका झुकाव एवं स्नेह मेरे साथ बहुत बढ़ गया था, तभी अमर स्वामी जी की प्रेरणा पर इन्होंने मुझसे मौलाना इमामुद्दीन रामनगरी बनारस वालों की कुछ पुस्तकें लीं और सत्यार्थ प्रकाश का असत्यार्थ प्रकाश, आदि-आदि और अपने जबरदस्त स्वाध्याय के आधार पर उनका सटीक, तर्कपूर्ण मुँहतोड़ उत्तर- 'मौलाना तर्क की तराजू पर' नामक पुस्तक के रूप में दिया। यह पुस्तक बहुत चर्चित हुई और यशपाल जी की साहित्य जगत में एक पहचान बन गयी। फिर तो एक के बाद एक इन्होंने कई पुस्तकों का निर्माण किया, जो तपोवन-आश्रम देहरादून से प्रकाशित हुई।

मुझे श्री यशपाल जी ने अनेकों बार आग्रह किया कि- यह साहित्य अमर स्वामी प्रकाशन विभाग से प्रकाशित होना चाहिये ताकि यह अधिक से अधिक लोगों तक पहुँच सके, परन्तु चाहते हुए भी ऐसा नहीं हो पाया। जबकि एतद् विषयक पुस्तकें अधिकतर अमर स्वामी प्रकाशन विभाग ही प्रकाशित करता है, जैसे-

- कौन कहता है द्रौपदी के पाँच पति थे?
- हनुमानादि वानर बन्दर थे या मनुष्य?
- निर्णय के तट पर (प्राचीन शास्त्रार्थों का दुर्लभ संग्रह)

इस तरह की खोजपूर्ण पुस्तकें जिनके लेखक श्री अमर स्वामी जी महाराज ही हैं, इसी प्रकाशन से प्रकाशित होती है। उसी श्रृंखला में आदरणीय श्री यशपाल आर्य जी का साहित्य भी हैं। मेरा प्रयास रहेगा कि भविष्य में उनकी पुस्तकों का प्रकाशन, अमर स्वामी प्रकाशन विभाग गाजियाबाद से हो।

Pinku Pradhan

प्रस्तुत पुस्तक - कौन कहता है कर्ण कुंती का पुत्र था?

इस विषय पर एक वक्तव्य जो सार्वजनिक रूप में आर्य समाज धामावाला देहरादून के वार्षिकोत्सव पर अमर स्वामी जी महाराज द्वारा दिया गया था, जिससे श्रोताओं में बड़ी खलबली मच गयी थी, तभी स्वामी जी ने आदरणीय यशपाल जी को अनेकों प्रमाण नोट कराये थे तथा उन्हें इस विषय पर लिखने की प्रेरणा दी थी। मुझे आज तक याद है, तब स्वामी जी ने श्री यशपाल जी एवं अन्य लोगों को कहा था कि- हमारा परम कर्तव्य बन जाता है कि हम अपने इतिहास की रक्षा करें, अपने पूर्वजों को कलंकित होने से बचायें, अपनी संस्कृति को सुरक्षित करें। स्वामी जी द्वारा दी गयी प्रेरणा का प्रतिफल ही यह पुस्तक आपके सामने मौजूद है।

लेखक द्वारा पूरी सामग्री आपके सामने परोस दी गयी है, आप स्वयं निर्णय करें, और प्रत्येक बात को तर्क की कसौटी पर कसें, तो सारा झूठ-सच सामने आ जायेगा। हालांकि आज आदरणीय श्री यशपाल जी इस दुनिया में नहीं हैं। परन्तु उनका मेरे प्रति स्नेह, वात्सल्य भरा व्यवहार मुझे आज भी याद आता है। उनकी इस कृति को छाप कर मुझे स्वयं में आत्म सन्तोष हुआ है, आगे भी निरन्तर यह पुस्तक इसी प्रकार प्रकाशित होती रहेगी।

निवेदक :

लाजपत राय अग्रवाल

(वैदिक मिशनरी)

Pinku Pradhan

अपनी बात

महाभारत युद्ध को पाँच हज़ार वर्ष बीत गए। इस लम्बी अवधि में किस ग्रंथ में कितनी मिलावट हो गई होगी? इसका अनुमान आज मुद्रण के युग में लगाना सहज नहीं है। विदेशी आक्रान्ताओं की वक्र दृष्टि और उन्हीं जैसी हमारी घरेलू मतमतान्तरों की एक दूसरे को नष्ट कर देने की वैराग्नि में जल कर भी, यदि कोई ग्रंथ आज शेष है तो यही कम आश्चर्य की बात नहीं है। परन्तु समय के इस विशाल अन्तराल ने हमारी सोच में जो परिवर्तन पैदा कर दिया है, आज उस पर विचार करना अत्यन्त आवश्यक है।

मैं बचपन से ही यह सुनता चला आया हूँ कि- द्रोपदी महा सती थी और उसके पाँच पति थे। कुन्ती पतिव्रता थी, पवित्रात्मा थी, केवल सत्य ही बोलती थी। कर्ण इसी कुवांरी कुन्ती का कानीन पुत्र था। मैं बार-बार इन्हीं प्रसंगों को सुनते-सुनते कभी यह विचार ही न कर पाया कि इन पर भी अन्वेषणात्मक दृष्टि से कुछ विचार करने की ज़रूरत है। महाभारत को खोल कर देख तो लिया जाये।

Pinku Pradhan

एक दिन आर्यसमाज के एक सदस्य ने एक लिखित प्रश्न भेजा कि जिस स्त्री के पाँच-पाँच पति हों, क्या वह कभी पतिव्रता और सती साध्वी हो सकती है? आर्य समाज देहरादून के साप्ताहिक सत्संगों में लगभग तीस वर्ष पूर्व मैंने ही यह सिलसिला आरम्भ किया था कि स्वाध्यायशील आर्यजन अपनी शंकाएं मंत्री जी के पास लिखकर भेज दिया करें और किसी रविवार के साप्ताहिक सत्संग में ही हमारे सदस्यों में से कोई एक, पूरी तैयारी से उस प्रश्न का समाधान कर दिया करे।

मैं अपने को भाग्यशाली मानता हूँ कि लगभग तीस वर्षों से ही सदस्यों द्वारा पूछे गये प्रश्नों का समाधान करने का अवसर मुझे दिया जाता रहा है। इस उपर्युक्त प्रश्न के आने पर मैंने खोज आरम्भ की। पता चला कि आर्य समाज के प्रसिद्ध शास्त्रार्थ महारथी **श्री अमर स्वामी जी महाराज** ने प्रमाणों व प्रबल युक्तियों से भरपूर, एक पुस्तक इसी विषय* पर लिखी है। मेरा प्रयत्न व्यर्थ गया पुस्तक मुझे मिली नहीं। निराश होकर महाभारत पढ़ना शुरू किया और पाँच किश्तों में पूरी एक भाषण-माला देकर समाधान कर दिया। तपोवन आश्रम की मासिक पत्रिका **'पवमान'**- ने उस भाषण को ६-७ किश्तों में छाप भी दिया।

* कौन कहता है द्रौपदी के पांच पति थे? आप प्रकाशन से मंगा कर पढ़ सकते हैं।

लाजपत राय अग्रवाल

Pinku Pradhan

उसी समय महाभारत पढ़ते-पढ़ते, ऐसे प्रसंग स्वतः सामने आ गए जिन्होंने कुन्ती देवी के पावन चरित्र से अन्धकार का पर्दा हटा दिया। तब मैंने आर्यसमाज देहरादून के साप्ताहिक सत्संगों की तीन-चार किश्तों में कुन्ती और कर्ण सम्बन्धों का विवेचन कर दिया। परन्तु समयाभाव के कारण उसे लेखबद्ध न कर सका। कई बरस के बाद जब व्यवसाय छोड़ दिया तो समय मिला। वह विवेचन अब सेवा में प्रस्तुत है। किसी को ठोंक पीट कर या मन में पूर्व से ही कोई निश्चित धारणा बना कर किसी पूर्वाग्रह के वशीभूत होकर यह मैंने नहीं लिखा है।

पाठकों से भी यही निवेदन है कि वे भी किसी पूर्वाग्रह से ग्रसित हुए बिना, पक्षपात-रहित भाव से अन्वेषण दृष्टि से इस पर विचार करेंगे, सत्य के दर्शन होने में कोई देर न लगेगी और एक देवी के पावन चरित्र पर जो कीचड़ उछाला गया है, जानबूझ कर अपमानित करने का जो प्रयास किया गया है, उसका पर्दाफ़ाश हो जायेगा और एक पवित्रात्मा के माथे पर लगा हुआ यह कलंक का टीका भी धुल जायेगा।

आर्य निवास भवदीय
१/३-ए धामावाला मौहल्ला, देहरादून यशपाल आर्य
(उत्तराखण्ड) २३ अगस्त सन् १९९८ ई०

Pinku Pradhan

आदि पर्व

कुन्ती ने अपने पति पाण्डु से कर्ण की जन्मगाथा छिपा ली।

महाराज पाण्डु का समस्त जीवन अत्यन्त विलास में डूबा रहा। सारा यौवन यों ही बीत गया। बुढ़ापा जल्दी आ गया। इन्द्रियों में शैथिल्य आ गया। चिकित्सकों ने राजा को सावधान कर दिया कि यदि अब स्त्री-संग करोगे तो मृत्यु का आलिंगन करोगे।

राजा स्वास्थ्य-लाभ के लिए अपनी दोनों ब्याहता पत्नियों अर्थात् कुन्ती और माद्री को साथ लेकर वन में रहने लगा। क्योंकि यक्ष्मा से पीड़ित के लिए वन का खुला जलवायु स्वास्थ्य की दृष्टि से अति लाभकर है।

वन में वास करते हुए भी राजा के मन में शान्ति नहीं थी। वह प्रतिक्षण परेशान रहता। उसे कोई उत्तराधिकारी के रूप में सन्तान प्राप्त न थी जो उसके पश्चात् उसके विशाल साम्राज्य को संभालती।

वह दिन-रात सन्तान की ही चिन्ता में डूबा रहता। अन्ततः एक दिन उसने अपनी पत्नी कुन्ती से अपने मन की

Pinku Pradhan

यह व्यथा कह ही दी, यथा-

सोऽब्रवीद् विजने कुन्तीं धर्मपत्नीं यशस्विनीम्।
अपत्योत्पादने यन्त्रमापदि त्वं समर्थय।।

(महाभारत आदि पर्व ११९/२७ पृष्ठ ३५५)

हे देवी! हमारे लिए यह आपत्काल है। इस समय सन्तानोत्पत्ति के निमित्त जो भी आवश्यक प्रयत्न तुम कर सकती हो वह करो।

वह कुन्ती देवी भी अपने पति की इस मानसिक पीड़ा से परेशान होकर पति को बार-बार सान्त्वना देने लगी। पर कोरी सान्त्वना से क्या होना था? तब पाण्डु ने कुन्ती को समझाया कि-

हे कुन्ती! सन्तान अर्थात् पुत्र बारह प्रकार के होते हैं। छः प्रकार के दायाद बान्धव और छः प्रकार के अदायाद बान्धव। धर्मशास्त्र और राजनियम के अनुसार पाण्डु ने इन बारह प्रकार के पुत्रों में से कैसा भी पुत्र हो, मुझे स्वीकार है। मुझे तो सिर्फ पुत्र से मतलब है-

वह स्वयंजात हो, गोद लिया हुआ, दत्तक हो, कृत्रिम हो, सहोढ़ हो, कानीन हो। इनमें से पूर्व के अभाव में ही दूसरे पुत्र की अभिलाषा करे।

देखिये महाभारत आदि पर्व ११९/३५ पृष्ठ ३५६

Pinku Pradhan

तब पति की अन्तर्वेदना और उनके मनोभावों को समझ कर कुन्ती कहने लगी कि-

हे देव! मैं महात्मा शूरसेन की पुत्री हूँ। परन्तु मेरे पिता ने मेरे जन्म से पूर्व ही अपने मित्र महाराज भोज को यह आश्वासन दे दिया था कि जो भी मेरी प्रथम सन्तान होगी, वह मैं तुम्हें दे दूँगा।

परिणामत: मेरे पिता ने मुझ कुन्ती को भोज के हवाले कर दिया। उन्हीं महात्मा ने मेरा पालन-पोषण किया।

कभी भ्रमण करते हुए दुर्वासा ऋषि हमारे यहाँ पधारे थे, तभी पिताजी ने मुझे बताया कि ये बहुत उच्च कोटि के महात्मा हैं, पर हैं अत्यन्त क्रोधी। अत्यन्त श्रद्धा और धैर्य से इनकी सेवा की जानी चाहिए।

उन महान् क्रोधी महात्मा दुर्वासा की सेवा का समस्त भार मेरे पिता ने मुझ पर डाल दिया। मैंने भी उनके समस्त क्रोध को सहन करते हुए अत्यन्त श्रद्धा भाव से सेवा करके उनको प्रसन्न कर दिया।

तब एक दिन, जब वे महात्मा जाने लगे, तो मुझसे बोले-

"मैं तेरी सेवा से अत्यन्त सन्तुष्ट हूँ। मुझसे जो चाहे वरदान माँग ले, मैं तुझे दे दूँगा"

Pinku Pradhan

तब मेरे बार-बार इन्कार करने पर भी उन महात्मा ने मुझे आशीर्वाद दे दिया कि-

यं यं देवं त्वमेतेन मन्त्रेणावाहयिष्यसि।
अकामो वा सकामो वा वशं ते समुपेष्यति॥

(महाभारत आदि पर्व १२१/१३ पृष्ठ ३६०)

आगे देखिये-

तस्य तस्य प्रसादात् ते राज्ञि ते पुत्रो भविष्यति।

(महाभारत आदि पर्व १२१/१४ पृष्ठ ३६०)

अर्थात्- तू जिस जिस देवता का इस मंत्र से आह्वान करेगी, वह देवता चाहे अकाम हो या सकाम, तेरे वश में होकर तेरे सामने उपस्थित हो जायेगा और उस देवता की प्रसन्नता से तुझे पुत्र की प्राप्ति हो जायेगी।

हे देव! मैं समझती हूँ ब्राह्मण के उस मंत्र और वरदान के पूर्ण होने का समय अब आ गया है :-

आवाहयामि कं देवं ब्रूहि सत्यवतांवर।

(महाभारत आदि पर्व १२१/१६ पृष्ठ ३६०)

हे देव! कहिए मैं किस देवता का आह्वान करूँ?

धर्ममावाहय शुभे स हि लोकेषु पुण्यभाक्।

(महाभारत आदि पर्व १२१/१७ पृष्ठ ३६०)

शुभे! सबसे पहले धर्म का आह्वान करो। वह ही सर्वलोकों में धर्मात्मा है। तब कुन्ती ने पाण्डु की इच्छानुसार

Pinku Pradhan

धर्म का आह्वान किया और योगमूर्ति धारण किए हुए उस धर्म से संयुक्त होने पर कुन्ती को पुत्र की प्राप्ति हुई।

(महाभारत आदि पर्व १२२/५/ पृष्ठ ३६१)

दूसरी बार कुन्ती ने महाबली वायु का आह्वान किया और भीमसेन को जन्म दिया था। उसी दिन हस्तिनापुर में दुर्योधन ने जन्म लिया था।

(महाभारत आदि पर्व १२२/१९ पृष्ठ ३६२)

और इन्द्र देव को बुलाने के लिए तो स्वयं पाण्डु महाराज ने तपस्या और प्रार्थना की।

(महाभारत आदि पर्व १२२/२६-२७ पृष्ठ ३६३)

तत्पश्चात् पाण्डु के आदेशानुसार कुन्ती ने इन्द्रदेव का आह्वान किया और अर्जुन को प्राप्त किया।

(महाभारत आदि पर्व १२२/३५ पृष्ठ ३६३)

जैसा कुन्ती ने पति से कहा था कि ब्राह्मण का आशीर्वाद सफल होने का समय आ गया है उसने वैसा कर दिखाया-

ब्राह्मणस्य वचस्तथ्यं तस्यकालोऽयमागतः।
तेन मंत्रेण राजर्षे यथास्यान्नौ प्रजाहिता॥

(महाभारत आदि पर्व १२१/१५/३६०)

इसके पश्चात् एक दिन देवी माद्री ने अपने पति महाराज पाण्डु से प्रार्थना की कि हे देव! यदि आप देवी कुन्ती से कह दें तो वह मुझे भी सन्तान प्राप्त कराने में समर्थ है। इसमें हम

Pinku Pradhan

सबका हित है, तथा मेरा भी।

यदि त्वपत्य संतानं कुन्तिराजसुता मयि।
कुर्यादनुग्रहो मे स्यात् तव चापि हितं भवेत्॥

(महाभारत आदि पर्व १२३/५ पृष्ठ ३६६)

जन्मेजय! तब महाराज पाण्डु के कहने से कुन्ती ने देवी माद्री से कहा तुम एक बार किसी देवता का चिन्तन करो, उस से तुम्हें योग्य सन्तान की प्राप्ति होगी, इसमें कोई संशय नहीं है। देखिये-

(महाभारत आदि पर्व १२३/१५)

और तब माद्री ने मन ही मन कुछ सोच कर दोनों अश्विनी कुमारों का स्मरण किया। तब उन दोनों ने आकर माद्री के गर्भ से दो जुडवां पुत्र उत्पन्न किए।

आप सारा का सारा प्रसंग पढ़ जाइये। कुन्ती ने पाण्डु से यह कहा ही नहीं कि पतिदेव मैंने कुवांरी अवस्था में इस मंत्र का परीक्षण कर लिया था और एक सन्तान को जन्म भी दिया था। अपितु वह तो कहती है कि-

"ब्राह्मण के उस आशीर्वाद और मंत्र के पूर्ण होने का समय अब आ गया है।"

यदि कुन्ती ने कौमार्य में किसी सन्तान को जन्म दिया होता। वह चाहे मंत्र के द्वारा या सांसारिक विधि से! तो आज का दिन तो उसके लिए वरदान दिवस सिद्ध हो जाता।

Pinku Pradhan

हमारे एक मित्र कहने लगे-

यशपाल जी! कोई पत्नी अपने पति से यह कैसे कह सकती है कि मैंने कुमारी रहते हुए एक सन्तान को जन्म दिया था?

बेशक! आपका कथन एकदम उचित है। दो ही तो सम्भावनाएं हैं-

एक यह कि कुन्ती ने मंत्र-शक्ति से सन्तान को जन्म दिया और दूसंरी यह कि बचपन में किसी भूल का परिणाम वह सन्तान थी।

हम पूछते हैं कि-

यदि वह व्यभिचारिणी नहीं थी और उसे कन्या रहते पुत्र की प्राप्ति किसी मंत्र के द्वारा हुई थी तो आज पति के सामने उस बात को स्वीकार करने में परेशानी क्या थी? क्योंकि पति वृद्ध हो गया है, सन्तान उत्पन्न करने के सर्वथा अयोग्य हो चुका है, रही सही कसर तपेदिक ने पूरी कर दी है। सन्तान न होने की पीड़ा उसे दिन-रात खाए जा रही है। ऐसी अवस्था में वह अपनी पत्नी से कहता है मुझे पुत्र चाहिए। जैसे भी हो पुत्र प्राप्त करके मुझे दो। वह उसे बताता है कि पुत्र बारह प्रकार से प्राप्त हो सकते हैं और संकेत देता है कि इन बारह प्रकार के पुत्रों में से कोई भी पुत्र मुझे स्वीकार है।

Pinku Pradhan

ऐसी अवस्था में भी कुन्ती मंत्र-प्राप्ति तक की सारी गाथा तो पति को सुना देती है परन्तु ये नहीं कहती कि मैंने इस मंत्र का प्रयोग करके कन्या रहते हुए ही कर्ण को जन्म दे दिया था। यदि वह बता देती और पाण्डु उसके चरित्र पर सन्देह करता, उसकी बात को असत्य या मन घड़न्त मानता तो कुन्ती को पूरा अवसर था खुल कर कहने का कि-

हे देव! आप मुझ पर कुलटा या चरित्रहीन होने का न सन्देह कर सकते हैं और न इलज़ाम लगा सकते हैं। यदि आपको मेरी बात का विश्वास नहीं होता तो आप एक-एक देवता का नाम बोलते जाइये मैं प्राप्त मंत्र के बल से आपके सामने पुत्रों की लाइन लगा कर खड़ी कर देती हूँ।

इस उत्तर के पश्चात् पाण्डु के पास कहने को कुछ न रहता। और यदि पति चाहता तो कुन्ती उसी समय देवताओं से मंत्रों के द्वारा पुत्रों की प्राप्ति करके दिखा देती। आखिर धर्मराज, भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव को भी तो उसने मंत्र के बल से ही जन्म देकर पति की इच्छा पूरी की थी। कुन्ती को कुलटा न मानने वाले सब यही तो मानते हैं।

यदि कुन्ती ने कर्ण को जन्म दिया होता तो पति को कर्ण के जन्म की बात बताने का! इससे उत्तम अवसर तो कभी संभव ही नहीं था। चरित्रहीनता का कलंक भी न लगता, पति से चोरी भी न रहती। और यदि पति चाहता तो कर्ण जैसा वीर पुत्र, बिना कष्ट के प्राप्त हो जाता।

Pinku Pradhan

देखिये- महाभारत में आया है कुन्ती ने गुप्तचरों के द्वारा जान लिया कि उसका पुत्र जीवित है और अधिरथ सूत के घर में पल रहा है।

कुन्ती ने कब बताया कि कर्ण मेरा पुत्र है?

कुन्ती ने उस समय तो बताया नहीं कि कर्ण मेरा पुत्र है और बताया भी तो एक ऐसे फूहड़ अवसर पर कि जो भी कोई उसे सुने या पढ़े तो यही कहेगा कि- **'कुन्ती को पागलपन का दौरा पड़ा होगा'** इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं कह सकता।

नोट :- कुन्ती को कुलटा या बचपन में भूल करने वाली मानने वालों को हम महाभारत के स्त्री पर्व की व्याख्या में उत्तर देंगे।

आगे देखिये-

कर्ण की मृत्यु के पश्चात् कुन्ती ने युधिष्ठिर को बताया कि- कर्ण तुम्हारा ज्येष्ठ भ्राता था। महाभारत का युद्ध समाप्त हो गया, सारा कुरुक्षेत्र लाशों से पटा पड़ा है। धृतराष्ट्र की सलाह और युधिष्ठिर महाराज के आदेश से विदुर आदि ने मिलकर समर-भूमि में मारे गए वीरों के शव तलाश किए और

Pinku Pradhan

फिर उनका यथाक्रम दाह-कर्म संस्कार करने हेतु चन्दन, अगर, घृत, तैल, सुगन्धित पदार्थ, रेशमी वस्त्र आदि बड़ी भारी मात्रा में एकत्रित किए।

चिताः कृत्वा प्रयत्नेन यथा मुख्यान् नराधिपान्।
दाहयामासुरव्यग्राः शास्त्रदृष्टेन कर्मणा।।

(महाभारत स्त्री पर्व २६/३० पृष्ठ ४४२१)

राजा दुर्योधन, उसके निन्यानवें भाई, शल्य, शल, भूरिश्रवा, जयद्रथ, अभिमन्यु, लक्ष्मण, दु:शासन, विराट द्रुपद, शिखण्डी, धृष्टद्युम्न, राजा भगदत्त, पुत्रों सहित अमर्षशील वैकर्तन कर्ण आदि इन लोगों का दाहकर्म कर दिया गया।

कर्ण वकर्तनं चैव सह पुत्र अमर्षणम्।

(महाभारत स्त्री पर्व २६/३६ पृष्ठ ४४२२)

जिन लोगों के श्राद्ध होने थे उनके श्राद्ध भी कर दिए गए।

पितृमेधाश्च केषांचित

(स्त्री पर्व २६/३९ पृष्ठ ४४२२)

उसके पश्चात् सब लोग पवित्र गंगा-तट पर पर गए। आभूषण, दुपट्टे, पगड़ी आदि सबने उतार डाले और पिताओं, भाइयों, पुत्रों, पौत्रों, स्वजनों तथा आर्यवीरों के लिए श्रद्धांजलि दी।

Pinku Pradhan

भूषणानि उत्तरीयाणि वेष्ठानि अवमुच्य च।
ततः पितृणां भ्रातृणां पौत्रणां स्वजनस्य च॥
(महाभारत स्त्री पर्व २७/२ पृष्ठ ४४२२)

पुत्राणामार्यकाणां च पतीनां च कुरु स्त्रियः।
उदकं चक्रिरे सर्वा रुदत्यो भृश दुखिताः॥
(महाभारत स्त्री पर्व २७/३ पृष्ठ ४४२२)

सुहृदां चापि धर्मज्ञाः प्रचक्रुः सलिलक्रियाः।
(महाभारत स्त्री पर्व २७/४ पृष्ठ ४४२३)

कुन्ती ने कर्ण को जलांजलि दिलवाई।

तब सहसा शोक से रोती हुई कुन्ती देवी ने मन्द वाणी में अपने पुत्रों से कहा कि-

उस सत्यप्रतिज्ञ कर्ण को भी तुम लोग जलांजलि दे दो। वह तुम लोगों का बड़ा भाई था। भगवान् सूर्य के अंश से वह मेरे गर्भ से जन्मा था-

ततः कुन्ती महाराज सहसा शोककर्शिता।
रुदती मन्दया वाचा पुत्रान् वचनमब्रवीत्॥
(महाभारत स्त्री पर्व, २७/६ पृष्ठ ४४२३)

कर्णस्य सत्यसंधस्य संग्रामेषु अपलायिनः।
कुरुध्वमुदकं तस्य भ्रातुरक्लिष्ट कर्मणः॥
(महाभारत स्त्री पर्व, २७/११ पृष्ठ ४४२३)

Pinku Pradhan

स हि वः पूर्वजो भ्राता भास्करात् मय्यजायत।
कुण्डली कवची शूरो दिवाकरसमप्रभः॥
(महाभारत स्त्री पर्व २७/१२ पृष्ठ ४४२३)

कुन्ती की इस बात को सुनकर राजन! इस प्रकार बड़ा विलाप करते हुए धर्मराज युधिष्ठिर फूट-फूट कर रोने लगे। रोते ही रोते उन्होंने धीरे-धीरे कर्ण के लिए जल-दान किया और धर्मराज युधिष्ठिर ने विधिपूर्वक कर्ण के लिए प्रेत-कर्म भी सम्पन्न किया।

एवं विलप्य बहुलं धर्मराजो युधिष्ठिरः।
व्यरुद्रच्छनकै राजंचकारास्योदकं प्रभुः॥
(महाभारत स्त्री पर्व, २७/२५ पृष्ठ ४४२४)

सताभिः सह धर्मात्मा प्रेत्य कृत्यनन्तरम्।
चकार विधिवद् धीमान् धर्मराजो युधिष्ठिरः॥
(महाभारत स्त्री पर्व, २७/२८ पृष्ठ ४४२४)

युधिष्ठिर, धृतराष्ट्र को आगे करके, गंगा की ओर चल पड़े।

मननशील पाठक कृपया इस पर्व को पूरा पढ़ जाएँ। आपसे कोई भी समझदार व्यक्ति यह पूछने के लिए बाध्य हो जायेगा कि जब कर्ण का शव तो पहले ही जलाया जा चुका था, तो उस समय उसे पुत्र बताने की जरूरत ही क्या थी? और न ही बड़े-छोटे के क्रम का उस समय (कर्ण के विषय में) ध्यान

Pinku Pradhan

रखा गया और अब जब केवल जलांजलि भर देनी शेष रह गई थी, तो तब कुन्ती द्वारा कर्ण को पुत्र बताने की आवश्यकता क्या थी?

(क) यदि कर्ण कुन्ती का पुत्र होता और वह कुन्ती की बचपन की किसी भूल का परिणाम था, तब, जब सारा जीवन कुन्ती इस बात को सबसे छिपाकर, गुप्त रखने में सफल हो गई थी, तो आज कर्ण के मर जाने के पश्चात्, स्वयं ढिंढोरा पीटकर अपने को कुलटा सिद्ध करने, तथा अपनी ही सन्तानों की दृष्टि में अपने को नीचे गिराने और उन्हें अपने बड़े भाई का हत्यारा बताकर दुःखी करने का कोई कारण नहीं बताया जा सकता।

कुन्ती जैसी बुद्धिमती स्त्री, ऐसी मूर्खता कैसे कर सकती थी? यह वह कुन्ती है जिसने पाण्डु की मृत्यु के पश्चात् अपने पाँचों बच्चों को, जब तक राज्य की व्यवस्था से पाण्डु-पुत्र होना स्वीकार नहीं करवा लिया, तब तक तो धृतराष्ट्र को भी हवा नहीं लगने दी, कि पाण्डु का स्वर्गवास हो गया है। वही कुन्ती आज कर्ण को अपना पुत्र बता सकती थी क्या?

(ख) कर्ण मर गया। दाहकर्म संस्कार भी हो गया। यदि कोई पाप कुन्ती का था तो वह भी कर्ण के साथ जल कर भस्म हो गया।

ऐसे समय में कर्ण को पुत्र बताना तो साधारण, अनपढ़

Pinku Pradhan

स्त्री भी स्वीकार न करती। उस पर कोई दबाव नहीं, किसी को पता भी नहीं, और तो और कर्ण की मृत्यु के साथ यह मुद्दा भी सारा का सारा खत्म हो गया। **फिर कर्ण को जलांजलि तो बिना पुत्र बताए भी दी जा सकती थी।** जलांजलि देना यदि आवश्यक था तो भी वह तो कर्ण को बिना पुत्र बताए भी दी जा सकती थी।

जलांजलि आदि तो कोई भी दे सकता था। मित्र और सुहृद भी दे सकते थे, और दे भी रहे थे, देखिये-

सुहृदां चापि धर्मज्ञाः प्रचक्रु सलिल क्रियाः।

(महाभारत स्त्री पर्व, २७/४ पृष्ठ ४४२३)

जब उस समय मित्र, सुहृद, स्वजन सभी लोग जलांजलि दे रहे थे, तब कुन्ती भी तो बिना (पुत्र) बताए जलांजलि दिलवा सकती थी। यदि युधिष्ठिर पूछ ही लेता तो वह कह सकती थी-

उस वीर ने मेरे चार पुत्रों को अवध्य घोषित किया था और मरते दम तक उसने अपना वह व्रत निभाया। फिर कर्ण को जलांजलि देने के लिए तो उसकी वीरता ही पर्याप्त कारण थी। ऐसे में एक ढके-ढकाए पाप के ढेर को उघाड़ने और पुराने गड़े मुर्दे उखाड़ने का दोष कुन्ती जैसी राजनीतिज्ञा पर लगाना या उसे सत्य स्वीकार करना, स्वयं को धोखा देना है।

Pinku Pradhan

जलांजलि देना आवश्यक भी नहीं था

यदि जलांजलि दिए बिना कर्ण की गति या मोक्ष सम्भव नहीं था तो भी यह बात एक सीमा तक समझ में आ सकती थी और कहा जा सकता था-

ममतामयी माँ ने अपने को अपमानित करना तो स्वीकार कर लिया पर बच्चे के हाथ से स्वर्ग नहीं जाने दिया। परन्तु ऐसी बात भी नहीं है। श्रीकृष्ण जी महाराज युद्धारम्भ के समय अर्जुन को उपदेश देते हुए कह चुके थे कि-

हे कौन्तेय! यदि तू युद्ध भूमि में मारा गया तो स्वर्ग का सुख भोगेगा और यदि जीवित बच गया अर्थात् युद्ध जीत गया तो राज्य का सुख भोगेगा। तेरे तो दोनों हाथों में लड्डू हैं, देखिये-

हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गम् जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्।
तस्माद् उत्तिष्ठ कौन्तेय युद्धाय कृत निश्चयः॥

(श्रीमद्भगवद् गीता अध्याय २ श्लोक ३६)

अरे! तेरा तो स्वर्ग का द्वार खुल गया है। कोई भाग्यशाली क्षत्रिय ही ऐसे युद्ध का अवसर प्राप्त करते हैं। तू भाग्यशाली है जो तुझे ऐसे युद्ध का अवसर मिला है।

इस युद्ध में तू अगर जीत गया तो पृथ्वी का राज्य मिलेगा और मर गया तो स्वर्ग का द्वार तेरे लिए खुला है-

Pinku Pradhan

यदृच्छया चोपपन्नं स्वर्गद्वारमपावृतम्।
सुखिनः क्षत्रियाः पार्थ लभन्ते युद्धमीदृशम्॥

(श्रीमद्भगवद्गीता अध्याय २ श्लोक ३२)

स्वयं महाभारत के स्त्री पर्व के निम्न श्लोक भी इस बात की पुष्टि करते हैं कि युद्ध में मरने वाले वीरों के लिए तो स्वतः ही स्वर्ग के द्वार खुले पड़े हुए हैं, उन्हें जलांजलि देने की आवश्यकता ही नहीं है। यदि जलांजलि देने की इतनी ही ज़रूरत थी तो ऊपर दिए गए गीता के समस्त श्लोक तथा नीचे दिए जा रहे महाभारत स्त्री पर्व के समस्त श्लोक निरर्थक और झूठे साबित हो जायेंगे, देखिये-

न चाप्येतान् हतान् युद्धे राजन् शोचितुमर्हसि।
प्रमाणं यदि शास्त्राणि गतास्ते परमां गतिम्॥

(महाभारत स्त्री पर्व २/११ पृष्ठ ४३७६)

हतोऽपि लभते स्वर्गम् हत्वा च लभते यशः

(महाभारत स्त्री पर्व २/१४ पृष्ठ ४३७७)

क्षत्रियास्ते महात्मानः शूराः समिति शोभनाः।
अशीषः परमा प्राप्ता न शोच्याः सर्व एव हि॥

(महाभारत स्त्री पर्व, २/१९ पृष्ठ ४३७७)

इन समस्त श्लोकों की उपस्थिति में जलांजलि की बात उठाना एकदम कृष्ण की मान्यता के विरुद्ध, स्वयं श्री वेद व्यास की मान्यताओं की हत्या के समान है। इनका तो युद्ध में मर जाना भर ही उन्हें स्वर्ग पहुँचाने के लिए पर्याप्त है।

Pinku Pradhan

इसलिए कर्ण को जलाँजलि देने का प्रसंग सर्वथा अनुचित एवं विचारों से बाहर है।

यदि कृष्ण और महर्षि वेदव्यास की उक्त बात आपको न जंची हो तो इस विषय में गरुड़ पुराण की अवहेलना आप कैसे करेंगे? देखिये-

गरुड़ पुराण प्रेत खण्ड अध्याय ४ श्लोक १०९ से ११२ इस प्रकार हैं उन पर गहराई से ध्यान दीजिये-

जो ऊपर से उच्छिष्ट या नीचे से उच्छिष्ट होकर मरे, जो शस्त्रों के घात से मरे, जो कुत्ते के काटे से मरे, ये सब अशुभ मौतें हैं।।१०९।।

और जिनकी अकाल मृत्यु हुई है, वे सब जीवात्मायें अपने पापों के कारण नरक को भोग कर प्रेत योनियों को प्राप्त होती हैं।।११०।।

उन सबका न दाह-संस्कार करे, न जलांजलि, न सूतक, न पातक, न मृतक का विधान, और न उनका क्रिया कर्म करे।।१११।।

न पिण्ड-दान करे। यदि कोई भूल से करता भी है, तो वह सब मृतकों को प्राप्त नहीं होता, अपितु वह आकाश में ही नष्ट हो जाता है।।११२।।

देखिये गरुड़ पुराण का वह मूल पाठ भी नीचे दिया जा

Pinku Pradhan

रहा है-

उर्ध्वोच्छिष्ट अधरोच्छिष्टः उभयोच्छिष्टाः तु ये मृताः।
शस्त्रघातैर्मृता ये चास्य स्वस्पृष्टास्तथैव च॥
(गरुड पु० प्रेत ख०अ० ४ श्लोक १०९)

तत्तुदुर्मरणं ज्ञेयं यच्च जातं विधिं बिना।
तेन पापेन नरकान् भुक्त्वा प्रेतत्व भागिनः।
(गरुड पु० प्रेत ख०अ० ४ श्लोक ११०)

न तेषां कारयेद्दाहं सूतकं नोदक क्रियाम्।
न विधानं मृताद्यं न च कुर्यादौर्ध्व दैहिकम्॥
(गरुड पु० प्रेत ख०अ० ४ श्लोक १११)

न पिण्डदानं कर्त्तव्यं प्रमाद्याच्चेत करोति हि।
नोपतिष्ठति तत् सर्वम् अन्तरिक्षे विनश्यति॥
(गरुड पु० प्रेत ख०अ० ४ श्लोक ११२)

स्पष्ट है गरुड़ पुराण के इस आदेश के अनुसार भी न श्राद्ध, न पिण्डदान, न जलांजलि, न दाह-संस्कार, न क्रियाकर्मादि कुछ भी कर्ण के लिए नहीं किया जाना था क्योंकि वह तो शस्त्र द्वारा मारा गया था। अतः कर्ण को ध्यान में रखकर श्राद्ध का यह समस्त प्रकरण ही सर्वथा निरर्थक है। इसलिए कर्ण को कुन्ती का पुत्र बताने वाला लेख न तो पौराणिकों के अनुकूल है, और ना ही महर्षि वेदव्यास के ही अनुकूल है।

Pinku Pradhan

कुन्ती ने कर्ण की जन्म गाथा सुनाकर आखिर क्या पाया?.............

कुन्ती इस बात को जानती थी कि इस बात को सुनकर उसके पुत्र अपने को बड़े भाई का हत्यारा और पापी मानने लगेंगे। इसका परिणाम यह तो सम्भव था कि युधिष्ठिर जैसा पुत्र या तो आत्महत्या कर लेता या गृहत्याग कर देता। लाभ क्या था?

कर्ण के मर जाने तक भी युधिष्ठिर आदि पाँचों भाइयों को तो यह भी पता तक भी नहीं कि- कर्ण हमारा भाई था। दाह-संस्कार हो चुका, जलांजलि हो चुकी, तब युधिष्ठिर कहते हैं कि- हे नारद! **वे कर्ण कुन्ती के जेठे पुत्र, हम लोगों के जेठे भाई थे** यह बात हमारे सुनने में आई है, देखिये-

गूढोत्पन्नः सुतः कुन्त्या भ्रातास्माकमसौ किल।

(महाभारत आदि पर्व, १/२१-४४२६)

जलदान करते समय माता कुन्ती ने स्वयं बताया था कि कर्ण भगवान् सूर्य के अंश से उत्पन्न हुआ मेरा ही 'गूढ़' सर्वगुणसम्पन्न पुत्र था। जिसे मैंने पहले नदी के पानी में बहा दिया था।

तोयकर्मणि तं कुन्ती कथयामास सूर्यजम्।
पुत्र सर्वगुणोपेतमवकीर्णम् जले पुरा।।

(महाभारत आदि पर्व, १/२२-४४२६)

Pinku Pradhan

हाय! उस सहोदर भाई को अर्जुन ने मार डाला। प्रभो! इस गुप्त रहस्य को न तो माता कुन्ती ने प्रकट किया और ना ही कभी कर्ण ने कहा।

सोऽर्जुनेन हतो वीरो भ्रात्रा सहोदरः।
न चैव विकृतो मंत्रः पृथयास्तस्य वा विभो॥

(महाभारत आदि पर्व, १/३६-४४२७)

कर्ण के मरने के बाद माता द्वारा बता देने के बाद भी युधिष्ठिर कहता है-

सुना है कर्ण हमारा भाई था, माता ने जलांजलि के समय बताया था। उससे पहले न कभी माता ने ही बताया, और ना कर्ण ने ही।

नोट :- अब आप स्वयं ही विचार करें? आगे देखिये कर्ण की उत्पत्ति के विषय में।

कर्ण कानीन पुत्र था या गूढ़?

युधिष्ठिर ने बताया कि कर्ण हमारा 'गूढ़ोत्पन्न' भाई था

देखिये महाभारत (१/२१-४४२६)

कुन्ती और कृष्ण ने कर्ण से बात करते समय उद्योग पर्व में उसे **'कानीन'** पुत्र बताया था। शायद 'गूढ़ोत्पन्न' और 'कानीन' का झमेला आप समझे न होंगे। देखिये इसकी

Pinku Pradhan

जानकारी देते हुए मनु जी महाराज कहते हैं कि-

जिसके घर में कुंवारी से या शादी सुदा से पुत्र उत्पन्न हो जाता है और यह पता नहीं चलता कि यह किसका बीज है? वह घर में गूढ़ रूप से उत्पन्न पुत्र उसी घरवाले का होता है जिसकी पत्नी ने उसे जना हो अर्थात् जन्म दिया हो।

उत्पद्यते गृहे यस्य न च ज्ञायते कस्य सः।
स गृहे गूढ़ उत्पन्नस्तस्य स्याद्यस्यतल्पजः॥

(महाभारत आदि पर्व, ९/१७०-६८१)

यानी 'गूढ़' उत्पन्न का अर्थ यह हुआ कि-

यह नहीं कहा जा सकता कि उसका पिता कौन है? परन्तु यदि पिता का नाम पता हो तो उसे गूढ़ोत्पन्न कैसे कह सकते हैं? कुन्ती तो कर्ण के पिता का नाम स्वयं सूर्यदेव को बता रही है, फिर कर्ण गूढ़ोत्पन्न कैसे हो गया?

कानीन पुत्र वह है जो विवाह से पूर्व ही उत्पन्न हो जाये। बस! जिसके मुँह में जो आया, बता दिया। किसी ने कानीन बताया तो किसी ने गूढ़ोत्पन्न। सत्य एक ही होता है।

यदि कर्ण कुन्ती का पुत्र होता तो या तो 'कानीन' होता या 'गूढ़' दोनों तो नहीं हो सकता था।

Pinku Pradhan

महाभारत में कर्ण के जन्म की अद्भुत गाथा

कर्ण को कुन्ती का पुत्र सिद्ध करने के लिए महाभारत में मिलावट करने वालों को कितने-कितने भयंकर झूठ बोलने पड़े हैं, कितनी प्रकृति-विरुद्ध और नियम-विरुद्ध कल्पनाएं करनी पड़ी हैं? आज इनका विचार करके ही मन कांप उठता है, देखिये-

प्रकाशकर्त्ता तपनः सम्बभूव तया सह।
तत्र वीरः समभवत् सर्वशस्त्र भृतांवरः॥

(महाभारत आदि पर्व १०९/१८-३३४)

आमुक्त कवचः श्रीमान् देवगर्भः श्रियान्वितः।
सहजं कवचं बिभ्रत् कुण्डलोद्द्योतितानन:॥

(महाभारत आदि पर्व १०९/१९-३३५)

अजायतः सुतः कर्णः सर्वलोकेषु विश्रुतः।
प्राद्दाच्च तस्यैकन्यात्यं पुनः परम द्युतिः॥

(महाभारत आदि पर्व १०९/२०-३३५)

दत्त्वा च तपतां श्रेष्ठो दिवमाचक्रमे ततः।

प्रकाशकर्त्ता सूर्य ने समागम द्वारा कुन्ती को पुत्र उसी समय प्रदान कर दिया। वह पुत्र जन्म से ही कवच-कुण्डल धारण किये हुए, देवताओं के समान श्रीमान् और सर्वशास्त्रों का ज्ञाता हुआ और तब श्रेष्ठ सूर्यदेव कुन्ती को उसी समय पुनः

Pinku Pradhan

कन्यात्व प्रदान कर देवलोक को चले गए।

(१) उसी समय सूर्यदेव कुन्ती से मिले और उसी समय बच्चा पैदा हो गया?

संसार गवाह है कि- सन्तान के जन्म में माता को लगभग दस मास लगते हैं। परन्तु यहां तो कुन्ती इधर सूर्य से मिली और उधर पुत्र प्राप्त हो गया। यह प्रकृति के नियम के विरुद्ध है अर्थात् असम्भव है।

(२) दूसरी बात यह कही गई कि पुत्र जनते ही सूर्यदेव ने कुन्ती को पुनः कन्यात्व प्राप्त करा दिया।

यह कन्यात्व क्या किसी गाय-घोड़े या बैल का नाम है? जो बाज़ार में बिकता है? कन्या तो संज्ञा ही उसकी है जिसने पुरुष-संग नहीं किया। एक सूर्यदेव नहीं, लाख सूर्यदेव इकट्ठे हो जाएं, पुत्र जनने वाली को कन्यात्व प्रदान नहीं कर सकते।

विवाह हुए बिना सन्तान प्राप्त (पैदा) करने का नाम कन्यात्व नहीं है। कौमार्य का नाम कन्यात्व है जो एक बार नष्ट हो जाये तो पुनः लौटता नहीं।

सन्तान स्त्री-पुरुष के मेल से जन्म लेती है। भाइयो! यह मैथुनी सृष्टि है, सृष्टि के आरम्भ वाली कोई अमैथुनी सृष्टि नहीं है।

(३) केवल दैवी चमत्कार, मंत्र का प्रभाव बताकर,

Pinku Pradhan

कुन्ती को कुवांरी रहते हुए कर्ण को जन्म देने वाली बात बताकर उस पर लांछन लगाने वाला अपनी बात को अधिक प्रभावी बनाने के लिए कन्यात्व जैसी शब्दावली का प्रयोग कर रहा है कि मिलावट करने वाले को पाठक गूढ़ आस्तिक, कुन्ती का हितैषी, और ईश्वरभक्त मान लें ताकि इस प्रकार ज़हर अन्दर ही अन्दर और मार करता रहे।

(४) इनसे भी अधिक आश्चर्यजनक बात यह तो है कि कवच और कुण्डल पहने हुए ही जन्म लेना।

गप्पबाजी की भी कोई सीमा तो होनी चाहिए। पहले तो मंत्र के बल पर सन्तान पैदा करा दी, फिर तुरन्त उसी मिलन के साथ ही जन्म हो गया, बच्चा पैदा होने पर कन्यात्व भी प्रदान करा दिया और अब कवच-कुण्डल पहने हुए ही बच्चा माँ के पेट से बाहर आ गया। मिलावटकर्ता को एक झूठ को सिद्ध करने के लिए अनेक झूठों की एक पूरी श्रृंखला घड़नी पड़ी।

(५) कुन्ती ने उस सद्यःजात बालक को पिटारे में डाला, मोम से पिटारे के छिद्र बन्द करके उस पिटारे को जल में बहा दिया और जल में छोड़े गए उस बालक को अधिरथ सूत ने प्राप्त कर लिया, देखिये-

गूह मानापचारं सा बन्धुपक्षभयाद् तदा।
उत्ससर्ज कुमारं तम् जले कुन्ती महाबलम्॥

(महाभारत आदि पर्व ११०/२२-३३५)

Pinku Pradhan

तमुत्सृष्टं जलेगर्भं राधाभर्त्ता महायशाः।
पुत्रत्वे कल्पयामास सभार्यः सूत नन्दनः॥

(महाभारत आदि पर्व ११०/२३-३३५)

मंजूषा तु अश्वनद्याः सा ययौ चर्मण्वतीं नदीम्।
चर्मण्यवत्याश्च यमुनां ततो गंगा जगामह॥

(महाभारत पर्व वन, ३०८/२५-१८१५)

गंगायाः सूत विषयं चम्पामनुययौपुरीम्।
समंजूषागतो गर्भस्तरङ्गैरुह्यमानकः॥

(महाभारत बन पर्व, ३०८/२६-२८१५)

वह पिटारी अश्वानदी से चर्मण्वती नदी में, चर्मण्वती नदी से यमुना में और यमुना से गंगा में जा पहुँची। पिटारी में सोया हुआ वह बालक गंगा की लहरों से बहाया जाता हुआ, चम्पापुरी के पास सूत नगरी में जा पहुँचा?

अर्थात् वह पिटारी नवजात शिशु को लिए हुए एक के बाद एक नदी में से होती हुई, अनन्तः गंगा में जा पहुंची? आप स्वयं थोड़ा सा बुद्धि पर जोर डाल कर निम्न बिन्दुओं पर विचार कर सकते हैं कि-

● वह साधारण सरकण्डों का पिटारा ही तो था कोई फ़ौलादी पनडुब्बी तो थी नहीं।

● मोम लगाकर बन्द किए गये पिटारे के छेद तो यमुना के प्रबल थपेड़ों ने कुछ ही घण्टों में खोल दिए होंगे, फलतः

Pinku Pradhan

कुछ ही घण्टों में पिटारे में पानी भर गया होगा। पानी भरा और पिटारा डूबा।

● इस पर भी बच जाये तो वह सद्य:जात बालक जिसे प्रति तीसरे घण्टे में दूध चाहिए, वह हफ़्तों बिना दूध के कैसे जीवित रहा होगा?

● बरफ़-सा ठण्डा यमुना और गंगा का जल, जिसमें रहने पर एक ही घण्टे में स्वस्थ आदमी की भी कुल्फी जम जाती है, उस अति शीतल जल में वह नन्हीं सी जान कैसे हफ्तों-महीनों रहकर भी जीवित बची होगी?

● टोकरा-पिटारा तो बन्द रहा होगा, कि पानी अन्दर न घुसे या ऊपर से उसकी रक्षा हो सके या फिर खुला रहा होगा? दोनों अवस्थाओं में बालक बच नहीं सकता था। यदि बन्द था तो दम घुट कर मर जाता और यदि खुला था तो गरमी, सर्दी, धूप, वर्षा से सिकुड़ कर झुलस कर या निमोनिये से मर गया होता। अन्यथा आकाश में उड़ने वाले पक्षी उसकी बोटी-बोटी कर देते या उसे उठाकर चट कर गए होते या मगरमच्छ और घड़ियाल उसे निगल गए होते।

(६) यह हमारी या आपकी ही सोच नहीं है। मिलावट करने वाला भी स्वयं इन समस्त परेशानियों और कठिनाइयों को अच्छी तरह समझता था इसी वास्ते इस झूठ को सत्य साबित करने के लिए एक नया झूठ गढ़ा गया और कहा गया कि वह

Pinku Pradhan

बालक जन्म से कवच-कुण्डल पहने हुए ही पैदा हुआ था। जन्म के साथ कवच-कुण्डल पहने हुए पैदा करना इसलिए ज़रूरी था कि यह बताया जा सके कि इन्हीं के कारण वह चार-चार नदियों में बहता हुआ भी सुरक्षित रहा। भाईयो! यदि मिलावट करने वाला यह लिख देता कि माँ के पेट से एक पनडुब्बी, डुबकनी किश्ती में या वायुयान में बैठा वह हुआ बालक आया था तब ही हम उसका क्या कर लेते? देखिये आगे कहा है-

अमृतादुत्थितं दिव्यं तनुवर्म सकुण्डलम्।
धारयामास तम् गर्भम् दैवं च विधिनिर्मितम्॥

(महाभारत वन पर्व, ३०८/२७-१८१५)

महाभारतकार कहता है कि- उसके शरीर का दिव्य कवच और कान के कुण्डल, ये दोनों अमृत से प्रकट हुए थे। **वे ही विधाता द्वारा रचित उस कुमार को जीवित रख रहे थे।** हम समझते हैं इस पर अब और किसी टिप्पणी की आवश्यकता नहीं है।

एक मिलावट को सत्य सिद्ध करने के लिए, गप्पों और मिलावटों की एक पूरी श्रृंखला तैयार कर दी गई है। पर झूठ तो झूठ ही रहेगा। उस झूठ पर सत्य का काल्पनिक आवरण पहन कर कब तक चलेगा? आगे उद्योग पर्व के वर्णन में हम इस झूठ की भी सारी कलई खोल देंगे। □□□

Pinku Pradhan

उद्योग पर्व

कृष्ण और महावीर कर्ण

महाभारत के पाठक इस बात से भली प्रकार परिचित हैं कि महाभारत युद्ध आरम्भ होने से सात दिन पूर्व तक देवी कुन्ती ने या किसी पाण्डव ने, किसी कौरव ने श्री कृष्ण चन्द्र ने या फिर स्वयं कर्ण ने ही अपने को कुन्ती का पुत्र नहीं बताया था।

प्रथम बार यह वर्णन तब मिलता है जब महात्मा कृष्ण कौरव सभा से निराश होकर वापिस लौट आए और तब श्री कृष्ण जी स्वयं कर्ण से मिले। उस समय कृष्ण और कर्ण की जो परस्पर वार्ता हुई, हम उसे अपने शब्दों में रखने के बजाय महात्मा वेदव्यास के शब्दों में रखना चाहेंगे, देखिए-

धृतराष्ट्र ने संजय से पूछा-

हे संजय! सेवकों से घिरे हुए कृष्ण ने जब कर्ण को अपने रथ पर सवार करा लिया, तब उनकी परस्पर क्या-क्या बातचीत हुई? कृष्ण ने कर्ण को क्या-क्या प्रलोभन और

Pinku Pradhan

रिश्वत दी? हे संजय! जो कुछ भी उन दोनों के मध्य हुआ हो, चाहे मीठा हो या कड़वा! मुझे वह सब अक्षर-अक्षर निःसंकोच सुना डालो।

तब संजय ने कहना शुरू किया कि-

महाराज! उन दोनों में परस्पर वार्ता के दौरान श्रीकृष्ण ने कर्ण से कहा कि-

हे कर्ण! कुंवारी लड़की के गर्भ से जो पुत्र उत्पन्न होता है, उसके दो भेद होते हैं। एक **'कानीन'** और दूसरा **'सहोढ़'**। ऐसे पुत्रों की माता का जिससे विवाह होता है, शास्त्रज्ञ उसी को उन पुत्रों का पिता मानते हैं।

कानि सान्त्वानि गोविन्दः सूतपुत्रे प्रयुक्तवान्।

(महाभारत उद्योग पर्व १४०/२-२४१५)

कानीनश्च सहोढ़श्च कन्यायां यश्च जायते।
वोढारं पितरं तस्य प्राहुः शास्त्रविदो जनाः॥

(महाभारत उद्योग पर्व १४०-८-२४१५)

कर्ण तुम्हारा जन्म भी इसी प्रकार हुआ है। तुम कुन्ती की कन्यावस्था में जन्मे उसके कानीन पुत्र हो। इसीलिए धर्मशास्त्रों के निर्णय के अनुसार ज्येष्ठ पाण्डव होने के कारण तुम्हीं राजा बनोगे।

सोऽसि कर्ण तथा जातः पाण्डोः पुत्रोऽसि धर्मतः।
निग्रहाद धर्मशास्त्राणामेहि राजा भविष्यति॥

(महाभारत उद्योग पर्व १४०-९-२४१५)

तात्! आज यहाँ से मेरे साथ चलने पर पाण्डवों को तुम्हारे विषय में यह पता चल जाना चाहिए कि तुम कुन्ती के बड़े पुत्र हो और युधिष्ठिर से पहले तुम्हारा जन्म हुआ था।

मया सार्धमितो यातमद्य त्वां तात पाण्डवाः।
अभिजानन्तु कौन्तेयं पूर्वजातं युधिष्ठिरात्॥

(महाभारत उद्योग पर्व १४०-११-२४१५)

हे तात! पाँचों भाई पाण्डव, 'द्रोपदी के पाँचों पुत्र', तथा अजेय अभिमन्यु ये सभी तुम्हारे चरण स्पर्श करेंगे। ॥१२॥

पाण्डवों की सहायता के लिए आए हुए समस्त राजा, राजकुमार तथा अन्धक और वृष्णीवंश के योद्धा भी तुम्हारे चरणों में मस्तक झुकाएंगे॥१३॥

राजपुत्र एवं राजकन्याएं तुम्हारे अभिषेक की सामग्री लेकर आएंगी॥१४॥

पाण्डवों के पुरोहित धौम्य ऋषि तुम्हारा अभिषेक करेंगे। इस प्रकार सब तुम्हें पृथ्वी-पालक सम्राट् के पद पर विराजमान कर देंगे।

Pinku Pradhan

कठोर व्रत का पालन करने वाले धर्मात्मा कुन्तीनन्दन राजा युधिष्ठिर तुम्हारे युवराज होंगे। जो श्वेत चँवर हाथ में लेकर रथ में तुम्हारे पीछे बैठेंगे। महाबली कुन्ती-कुमार भीमसेन राज्यभिषेक हो जाने के पश्चात् तुम्हारे मस्तक पर महान् श्वेत छत्र-धारण कराएंगे।

युवराजोऽस्तु ते राजा धर्मपुत्रो युधिष्ठिरः।
गृहीत्वा व्यजनं श्वेतं धर्मात्मा संशितव्रतः॥

(महाभारत आदि पर्व १४०-१९-२४१६)

कृष्ण की सारी बात सुन लेने के बाद कर्ण कहने लगा कि-

हे केशव! आपने प्रेम, सौहार्द, मैत्री और मेरे हित की इच्छा से जो कुछ कहा है वह निःसन्देह ठीक है।

असंशयं सौहृदान्मे प्रणयाच्चात्थ केशव।
सरव्येन चैव वार्ष्णेय श्रेयस्कामतयैव च॥

(महाभारत आदि पर्व १४१-१-२४१६)

कर्ण यहीं नहीं रुकता, आगे और बहुत कुछ कहता है, जैसे कि-

हे कृष्ण! जैसा कि आप मानते हैं धर्मशास्त्र के निर्णय के अनुसार मैं धर्मतः पाण्डु का ही पुत्र हूँ, **इन सब बातों को मैं**

Pinku Pradhan

भी अच्छी तरह जानता और समझता हूँ परन्तु हे कृष्ण कन्यावस्था में भगवान् सूर्य के संयोग से कुन्ती देवी ने मुझे गर्भ में धारण किया था और मेरा जन्म हो जाने पर उन सूर्यदेव की आज्ञा से ही मुझे जल में विसर्जित भी कर दिया गया था।

कन्यागर्भं समाधत्त भास्करानां जनार्दन।
आदित्यवचनाच्चैय जातं मां सा व्यसर्जयत॥

(महाभारत उद्योग पर्व १४१.३.२४१७)

श्री कृष्ण इस प्रकार मेरा जन्म हुआ है। अतः मैं धर्मतः पाण्डु का ही पुत्र हूँ। परन्तु देवी कुन्ती ने तो मुझे इस प्रकार त्याग दिया था कि जिससे मेरा बचना ही सम्भव नहीं था।

हे मधुसूदन! उसके पश्चात् अधिरथ सूत ने मुझे जल में देखते ही पानी से बाहर निकाल कर तुरन्त अपने घर ले गए, बड़े स्नेह से मुझे अपनी पत्नी राधा की गोदी में डाल दिया।

अतः हे कृष्ण! सदा धर्म-शास्त्रों के श्रवण में तत्पर रहने वाला, मुझ जैसा धर्म को जानने वाला व्यक्ति भला उस राधा के मुख का ग्रास कैसे छीन सकता है? तथा इस बुढ़ापे में उसका पालन-पोषण करने के स्थान पर उसे त्याग देने की क्रूरता कैसे कर सकता है?

हे कृष्ण! उन्होंने ही मेरा नाम शास्त्रोक्त विधि से सुषेण

Pinku Pradhan

रक्खा था। सूत जाति की कई कन्याओं से मेरा विवाह करवा दिया। अब उनसे मेरे पुत्र और पौत्र भी हैं।

हे कृष्ण! अपनी पत्नियों में भी मेरा भारी अनुराग है। उन्हें मैं त्यागना नहीं चाहता।।१०-११।।

हे कृष्ण! यदि सम्पूर्ण पृथ्वी का राज्य और स्वर्ण के ढेर या बड़ी से बड़ी खुशियाँ या भयंकर से भयंकर भय भी कोई मुझे दे तो भी मैं यह सब सम्बन्ध मिथ्या नहीं करना चाहता।।१२।।

हे कृष्ण! मैंने दुर्योधन का सहारा पाकर धृतराष्ट्र के कुल के अधीन रहते हुए तेरह वर्षों तक अकण्टक राज्य सुख का उपभोग किया है।।१३।।

हे कृष्ण! मेरे भरोसे पर, तथा मेरे ही अटल विश्वास पर दुर्योधन ने पाण्डवों के साथ दुश्मनी मोल ली है और उन्हें युद्ध के लिए आह्वान किया है।।१५।।

हे जनार्दन! इस समय मैं वध, बंधन, भय, अथवा लोभ के कारण भी उस बुद्धिमान धृतराष्ट्र-पुत्र दुर्योधन के साथ मिथ्या व्यवहार नहीं करना चाहता। मैं उसे बीच मझधार में छोड़कर उसे धोखा नहीं दे सकता।।१७१।।

Pinku Pradhan

धृतराष्ट्रकुले कृष्ण दुर्योधन समाश्रयात्।
मया त्रयोदश समा भुक्तं राज्यमकण्टकम्॥
(महाभारत आदि पर्व १४१-१३-२४१७)

बधाद् बन्धनाद् भयाद वापि लोभाद् वापि जनार्दन।
अनृतं नोत्सहे कुर्तम् धार्तराष्ट्रस्य धीमतः॥
(महाभारत आदि पर्व १४१-१७-२४१७)

हे कृष्ण! मैं स्वीकार करता हूँ कि आपने मेरे हित के लिए ही यह सब बातें कहीं हैं। पाण्डव आपके आधीन हैं, इसलिए आप उनसे जैसा भी कहेंगे, वे अवश्य वैसा ही कर डालेंगे। यह मैं भलीभाँति जानता हूँ।

असंशयं हितार्थाय ब्रूयास्त्वं मधुसूदन।
सर्वम् च पाण्डवाः कुर्युस्त्वदवशित्वा तसंशयः॥
(महाभारत आदि पर्व १४१-१९-२४१८)

इस प्रकार बड़े धैर्य और विनम्रतापूर्वक कर्ण ने कृष्ण का प्रस्ताव ठुकरा दिया और कृष्ण से इतना और कह दिया कि-

हे मधुसूदन! **मेरे और आपके बीच जो यह गुप्त परामर्श हुआ है इसे आप अपने तक ही सीमित रक्खें।** हे कृष्ण! ऐसा करने में ही मैं सबका हित समझता और मानता हूँ।

Pinku Pradhan

मंत्रस्य नियमं कुर्यास्त्वमत्र मधुसूदन।
एतदत्रहितं मन्ये सर्वम् यादव नन्दन॥
(महाभारत आदि पर्व १४१-२०-२४१८)

हे कृष्ण! यह सब मैं इसलिए कहता हूँ कि- अपनी इन्द्रियों को संयम में रखने वाले धर्मात्मा राजा युधिष्ठिर को यदि यह पता चल गया कि मैं (कर्ण) कुन्ती का सबसे बड़ा पुत्र हूँ, तब वह राज्य ग्रहण नहीं करेगा।

यदि जानाति राजा मां धर्मात्मा संयतेन्द्रियः।
कुन्त्याः प्रथमजं पुत्रं न स राज्यं ग्रहिष्यति॥
(महाभारत आदि पर्व १४१-२१-२४१८)

हे शत्रुदमन कृष्ण! आप यह अच्छी तरह जान लें कि इस दशा में इस विशाल- समृद्धिशील राज्य को पाकर भी मैं यह सारा राज्य दुर्योधन के चरणों में ही रख दूंगा।

प्राप्य चापि महद् राज्यं तदहं मधुसूदन।
स्फीतं दुर्योधनायैव सम्प्रद्यमरिन्दम॥
(महाभारत आदि पर्व १४१-२२-२४१८)

कर्ण की सारी बात सुन कर बजाय इस पर कोई परेशानी प्रकट करने के बल्कि उल्टा कृष्ण बड़ा ठहाका मार कर हंसे और मुस्करा कर बोले-

Pinku Pradhan

कर्ण! मैं तो तुझे राज्य की प्राप्ति का उपाय बता रहा था। जान पड़ता है वह उपाय तुम्हें ग्राह्य नहीं है। तुम मेरे द्वारा दी गई पृथ्वी का शासन नहीं करना चाहते तो तुम्हारी इच्छा!

कर्णस्य वचनं श्रुत्वा केशवः परवीरहा।
उवाच प्रहसन् वाक्यं स्मितपूर्वमिदं यथा।।

(महाभारत आदि पर्व १४२-१-२४२०)

अपि त्वां न लभेत् कर्ण राज्यलम्भोपपादनम्।
मया दत्तं हि पृथिवीं न प्रशासितुमिच्छसि।।

(महाभारत आदि पर्व १४२-२-२४२०)

ठीक है कर्ण! आज से सातवें दिन अमावस्या होगी। उसके देवता इन्द्र कहे गए हैं। उसी अमावस्या को युद्धारम्भ होगा। उसी दिन तुमसे अब युद्ध-भूमि में ही मिलन होगा।

सप्तमाच्चापि दिवसादमावस्या भविष्यति।
संग्रामो युज्यतां तस्यां तामाहुः शक्रदेवताम्।।

(महाभारत आदि पर्व १४२.१८.२४२१)

हमने अब तक कृष्ण-कर्ण की परस्पर वार्ता के तीनों अध्याय पाठकों के सामने रख दिए हैं कि पाठक अन्धेरे में न रहें।

Pinku Pradhan

धृतराष्ट्र जब संजय से पूछता है कि-

कृष्ण ने कर्ण से क्या-क्या बात की? क्या-क्या प्रलोभन और रिश्वत दी? तो उसका विशेष कारण है।

धृतराष्ट्र जानता है कि दुनिया भर में इस समय कृष्ण की टक्कर का कोई दूसरा राजनीतिज्ञ है ही नहीं।

आज से सातवें दिन युद्ध होना है। ऐसे में व्यस्त कृष्ण, यदि कर्ण से मिलने के लिए आया है और उसे अपने रथ पर बैठा कर दूसरों से अलग ले जाकर बात करता है तो निश्चय ही कोई गुप्त वार्ता होगी।

कृष्ण ने अपने किसी लड़के या लड़की का रिश्ता तो कर्ण से करना नहीं है फिर क्यों ले गया कर्ण को एकान्त में? बस तोड़-फोड़ ही करेगा।

राजनीति में साम, दाम, दण्ड और भेद का ही तो खेल है। दण्ड से कर्ण भयभीत होने वाला नहीं। फिर क्या कर सकता है? कर्ण को हमसे तोड़ने के लिए रिश्वत ही तो दे सकता है, बस! यही करेगा।

धृतराष्ट्र का सोचना सत्य निकला। कृष्ण ने कर्ण को बतलाया-

Pinku Pradhan

वह कुन्ती का कानीन पुत्र है, ज्येष्ठ कौन्तेय है। इसलिए न केवल कौन्तेय है, धर्मशास्त्र के अनुसार वह पाण्डु की सबसे बड़ी सन्तान पाण्डव भी है।

कृष्ण के यह सब कहने पर कर्ण कोई आपत्ति नहीं करता। कहता है मुझे सब पता है। मैं कुन्ती और सूर्यदेव का पुत्र हूँ। माता कुन्ती ने मुझे सूर्यदेव के ही आदेश से जन्म के साथ ही जल में प्रवाहित कर दिया था। मुझे अधिरथ सूत की पत्नी राधा ने पाला-पोसा और बड़ा किया है।

तेरह वर्ष से दुर्योधन द्वारा प्रदत्त राज्य-सुख का उपभोग कर रहा हूँ। दुर्योधन ने पाण्डवों के साथ मेरे भरोसे और मेरे अटल विश्वास पर ही तो युद्ध की घोषणा की है।

न वह (कर्ण) राधा और अधिरथ को इस बुढ़ापे में छोड़ सकता है, और न दुर्योधन को मझधार में त्याग सकता है, अर्थात् वह दुर्योधन के साथ विश्वासघात नहीं कर सकता, अतः वह दृढ़ कृतसंकल्प है कि- मरे या जिये? वह अपने को कुन्ती का पुत्र नहीं कहेगा।

□□□

Pinku Pradhan

कर्ण कुन्ती का पुत्र नहीं है

क्योंकि कृष्ण ने कर्ण से यह कह दिया कि- **कर्ण कुन्ती का पुत्र है** इसलिए आप सबने मान लिया कि हाँ अवश्य है? कुन्ती ने कन्या रहते व्यभिचार किया था और पाप छुपाने के लिए कुन्ती ने उसे पानी में बहा दिया? क्योंकि कर्ण भी इस बात का विरोध नहीं करता और मानता है कि वह कुन्ती का ही पुत्र है तो आपने कर्ण के इस कथन पर आँखें मूंद कर विश्वास कर लिया?

क्या आपका कर्तव्य नहीं था कि इसकी जाँच पड़ताल करते, कृष्ण ने तो युधिष्ठिर से भी कहलवा दिया था कि **'अश्वत्थामा हतो हतः नरो वा कुँजरो वा'** तब तो आपने उसे सत्य स्वीकार नहीं किया था।

न्यायालय में केवल इतना कह देना ही पर्याप्त नहीं है कि हत्या या खून मैंने किया है। अपितु सच-झूठ को जानने के लिए न्यायालय इसकी जाँच-पड़ताल करता है। उसे कत्ल से क्या लाभ होता है? क्या उसी हथियार से कत्ल हुआ था जिससे कातिल बताता है?

यदि कातिल स्वीकार करे कि मैंने उसे पिस्टल से मारा था और उसके शरीर से बजाय पिस्टल की गोली निकलने के

Pinku Pradhan

थ्री-नाट-थ्री की गोली मिले तो अभियुक्त की स्वीकारोक्ति थोथी है। अविश्वसनीय है। इसलिए ज़रूरी है कि सही तथ्य पर पहुंचने के लिए कृष्ण और कर्ण दोनों को तर्क की कसौटी पर कसा जाये, देखिये कृष्ण कर्ण को कुन्ती का पुत्र बताते हैं और कहते हैं कि तुम्हारा राज्याभिषेक होगा और तुम्हारा युवराज बनेगा युधिष्ठिर।

(१) यदि कर्ण कुन्ती का पुत्र था तो कृष्ण जैसे महात्मा ने, यह शर्त कैसे लगा दी कि कर्ण का उत्तराधिकारी युधिष्ठिर होगा? यदि कृष्ण कर्ण को कुन्ती का पुत्र मानते होते और पुत्र होने के नाते उसका राज्य पर अधिकार मानते होते तो कर्ण का युवराज युधिष्ठिर कैसे होता?

(२) सारे महाभारत में विवाद ही केवल इतना है कि धृतराष्ट्र बड़ा था और सिंहासन का उत्तराधिकारी था, उसे राजा बनना चाहिए था परन्तु अन्धा होने के कारण उसका राज्याधिकार छिन गया। पाण्डु राजा बन गया जो छोटा था। एक बार राज्याधिकार छिन जाने के बाद राजगद्दी पाण्डु की दासी बन गई।

पाण्डु के मर जाने पर पाण्डवों के युवा होने तक धृतराष्ट्र केवल राज्य के प्रबन्धक अर्थात् मैनेजर की हैसियत से

Pinku Pradhan

राज्य करता है। परन्तु राज्य-सुख उपभोग का चस्का जिस दुर्योधन के मुख को लग गया है वह धर्म -अधर्म, नियम विधान, सबको ताक पर रखकर पाण्डु पुत्रों का राज्य उन्हें लौटाना नहीं चाहता। इसलिए हम कहते हैं कर्ण का युवराज तो कर्ण का पुत्र ही हो सकता था।

(३) रामायण में भी ऐसी घटना आई है जब मन्थरा केकैयी से कहती है-

कल राम राजा बन रहा है। भरत का अब क्या होगा?

तो भोली केकैयी कहती है-

राम राजा बने तो क्या हानि है? राम के बाद भरत बन जाएगा।

यह सुनकर मंथरा अपना माथा पीट लेती है और केकैयी से कहती है- हे रानी परम्परागत राजा के बाद उसका बेटा ही सिंहासन पर बैठता है। अतः राम का पुत्र ही आगे भविष्यं गद्दी पर बैठेगा और भरत कभी भी भविष्य में राजा नहीं बन सकेगा, देखिये-

भविता राघवो राजा राघवस्य च यः सुतः।
राजवंशात्तु भरतः केकैयी परिहास्यते॥

(बाल्मीकि रामायण अयोध्या काण्ड ८/२२)

Pinku Pradhan

न हि राज्ञः सुताः सर्वे राज्ये तिष्ठन्ति भामिनि।
स्थाप्यमानेषु सर्वेषु सुमहाननयो भवेत्॥

(बाल्मीकि रामायण अयोध्या काण्ड ८/२३)

तस्मात् ज्येष्ठे हि केकैयी राज्यतंत्राणि पार्थिवाः।
स्थापयन्त्यनवद्याङ्ग गुणवत्स्वितरेष्यापि॥

(बाल्मीकि रामायण अयोध्या काण्ड ८/२४)

पहले राजा, राम बनेगा फिर राम का पुत्र राजा बनेगा। इस प्रकार हे केकैयी, भरत तो राजवंश से ही अलग हो जायेगा।

हे भामिनी! राजा के सभी पुत्र राजसिंहासन पर नहीं बैठा करते। यदि सब ही सिंहासन पर बैठने लगें तो महान् अनर्थ हो जाएगा। इसलिए हे देवी! राजा लोग ज्येष्ठ पुत्र पर ही राज्य का भार स्थापित करते हैं।

(४) पाठक समझ गए होंगे। कृष्ण ज्येष्ठ पाण्डव होने के कारण कर्ण को राजा नहीं बना रहे हैं। यह तो कर्ण को कौन्तेय बनाने की घूस दी जा रही है।

अगर वह ज्येष्ठ पाण्डव होता और कृष्ण उसका ज्येष्ठ पाण्डव होने के नाते राज्य पर कोई अधिकार मानते तो उसके उत्तराधिकारी युवराज के लिए युधिष्ठिर का नाम आ ही नहीं सकता था।

Pinku Pradhan

(५) एक दूसरी बात पर भी विचार करिये, जिसमें कर्ण कहता है -

कि कृष्ण! हमारी आज की बात गुप्त रखना। किसी तीसरे के कान तक न पहुँचने देना क्योंकि युधिष्ठिर मुझे बड़ा भाई जानकर गद्दी पर नहीं बैठेगा और राज्य मेरे सुपुर्द कर देगा।

परन्तु जैसा तुमको पता है, कि मैं तो दुर्योधन के साथ पूर्ण रूपेण ऐसा बन्धा हुआ हूँ कि वह राज्य जो मेरे पास होगा तो मैं उसे दुर्योधन के चरणों में रख दूँगा। इस प्रकार पाण्डवों के तो सारे मनोरथ नष्ट हो जायेंगे। दुर्योधन बिना लड़े ही समस्त राज्य का स्वामी बन जायेगा।

(६) कर्ण की इस बात में बड़ा वज़न है। परन्तु बजाय इसका उत्तर देने के कृष्ण ठहाका लगा कर हँसते हैं और कहते हैं-

कर्ण! मैं तो तुझे राज्य प्राप्त करने का उपाय बता रहा था। जान पड़ता है तुझे राज्य ही नहीं चाहिए। **तू मेरे द्वारा दी गई पृथ्वी का शासन नहीं करना चाहता। मत कर, तेरी मर्ज़ी।** क्या अब भी पाठक कहते हैं कि कृष्ण कर्ण को कुन्ती का पुत्र मानते हैं?

कृष्ण कहते हैं कि-

Pinku Pradhan

कर्ण तेरा राज्य है कहाँ जिसे तू दुर्योधन को दे देगा? अरे तू पहले ये तो मान ले कि मैं घोषणा कर दूँ कि तू कौन्तेय है और हमारे साथ है, तेरा युवराज युधिष्ठिर है, तो इस विधि से तुझे राज्य मैं दे सकता हूँ। ये राज्य प्राप्त करने की विधि है। **तू कौन्तेय नहीं है, अपितु मैं तुझे कौन्तेय बना रहा हूँ** और उसका पूरा मूल्य चुकाने को भी तैयार हूँ।

(७) फिर कर्ण की बात में कितना विरोधाभास है? उसे भी देखें। एक ओर वह कहता है कि-

मैं दुर्योधन का दास हूँ। तेरह साल से उसी के कारण राज्य का सुख भोग रहा हूँ, परन्तु मुझे राज्य नहीं चाहिए।

दूसरी ओर वह कहता है-

कृष्ण! आज की बात गुप्त रखना वरना युधिष्ठिर का राज्य दुर्योधन के कदमों में लौटने लगेगा।

सारे महाभारत में केवल चार पात्र ऐसे हैं जो दुर्योधन को राजा बनाने के लिए धर्म-अधर्म, पाप-पुण्य अनीति-नीति सबका त्याग करने को कटिबद्ध हैं-

उनमें प्रथम है - शकुनी

दूसरा - दुःशासन

Pinku Pradhan

तीसरा - कर्ण

चौथा - धृतराष्ट्र

उनकी निष्ठा पर यदि अंगुली उठाई जा सकती है तो महाभारत का एक भी पात्र विश्वास के योग्य नहीं ठहरेगा।

(८) कर्ण, दुर्योधन के हाथ में आ रहे राज्य को क्यों ठोकर मार देना चाहता है? उसने दुर्योधन को क्यों नहीं बताया कि मैं कौन्तेय हूँ, ज्येष्ठ कौन्तेय? बस! फिर क्या था? न तो महाभारत का युद्ध विनाश का कारण बनता, न दुर्योधन मारा जाता और न कर्ण को ही अर्जुन के हाथ से मरना पड़ता।

केवल एक बार कह देता बस! दुर्योधन तो स्वयं ही ढिंढोरा पीट देता कि- **कर्ण कौन्तेय है अर्थात् पाण्डव है।**

आखिर एक दिन कृष्ण ने ही तो **''अश्वत्थामा हतो हतः नरो वा कुंजरो वा''** का नारा लगवा कर द्रोण की हत्या करवा दी थी। आज कर्ण यह सब कुछ क्यों नहीं करता? बात इतनी ही है कि वह जानता है कि **मैं कुन्ती का पुत्र नहीं हूँ।** उसे पता है कि कृष्ण कच्ची गोलियाँ नहीं खेला है। कम से कम कर्ण के खानदान की चालीस पीढ़ियों का लेखा-जोखा तो कृष्ण के हाथ में था।

Pinku Pradhan

कर्ण एक बार दुर्योधन या धृतराष्ट्र से कह कर तो देखता कि- **मैं कुन्ती का पुत्र हूँ** तो कृष्ण भरे बाज़ार में कर्ण के कपड़े उतारे बग़ैर उसे नंगा कर देता। लोग उस पर थूकते, जीते जी मर जाता, कहीं शक्ल दिखाने लायक भी न रहता।

कर्ण स्वयं न भी बताता पर यदि कहीं दुर्योधन या धृतराष्ट्र के कान में हल्की सी भनक भी पड़ जाती कि- **कर्ण कौन्तेय है** तो कर्ण और दुर्योधन के बीच अविश्वास का एक विशाल वट-वृक्ष खड़ा हो गया होता।

कर्ण को कुन्ती का पुत्र बना देना ही तो मानवता प्रेमी कृष्ण के अद्भुत बुद्धिचातूर्य और उसके कुशल राजनीतिज्ञ होने का सबसे प्रबल प्रमाण है।

अन्तत: कृष्ण महाभारत के विनाशकारी युद्ध को टालने के लिए हस्तिनापुर का राजमुकुट युधिष्ठर के सिर से उतार कर कर्ण के सिर पर भी रखने को तैयार हैं।

कृष्ण ने पूरा प्रयत्न भी किया परन्तु देश का दुर्भाग्य वह प्रयत्न सफल नहीं हुआ और महाविनाश टाला नहीं जा सका। ऐसे महामानव कृष्ण को बार-बार प्रणाम है।

□□□

Pinku Pradhan

कर्ण-कृष्ण के जाल से तो बच गया परन्तु कुन्ती के जाल में फँस गया

कृष्ण द्वारा कर्ण को दिया गया प्रलोभन जब काम न कर सका तो विदुर की राय से कुन्ती कर्ण से मिलने गई और जाने से पूर्व कुन्ती ने उन सब बातों की रिहर्सल की अर्थात् पूर्वाभ्यास किया जो कुन्ती को कर्ण से कहनी थीं, देखिये-

इति कुन्ती विनिश्चित्य कार्यं निश्चयमुत्तमम्।
कार्यार्थमभिनिश्चित्य ययौ भागीरथं प्रति॥

(महाभारत उद्योग पर्व, १४४/२६-२४२६)

आज कुन्ती का आत्म-विश्वास परम् चरम सीमा पर था। उसने निश्चय कर लिया था कि आज मैं कर्ण के विद्रोही मन को पाण्डवों के प्रति ठीक करके ही दम लूंगी।

आशंसेत्वद्य कर्णस्य मनोऽहं पाण्डवान् प्रति।

(महाभारत उद्योग पर्व १४४/१८-२४२६)

कर्ण जप से उठा, तो सामने कुन्ती को देखा। यथाशीघ्र प्रणाम किया और बोला मैं राधेय अधिरथ सूत का पुत्र कर्ण ... मैं आपके लिए क्या

Pinku Pradhan

कर सकता हूँ?

कुन्ती ने तुरन्त बात पकड़ ली। कर्ण! तू कौन्तेय है, राधेय नहीं है। तुम मेरे कानीन पुत्र हो। पार्थ हो। तुम पांचों भाइयों में श्रेष्ठ और जेठे हो। उसी समय आकाशवाणी* भी हुई। कर्ण! कुन्ती सत्य कहती है और यही तुम्हारे हित में भी है।

देखिए (महाभारत उद्योग पर्व १४६/१/३/२४२८)

वही बात जो पहले दिन कृष्ण ने कही थी उसी बात को अगले दिन कुन्ती दोहरा रही थी। एक असत्य बार बार बोला जाए तो सत्य में बदल जाता है।

शायद पता नहीं कृष्ण की बात का कर्ण ने कितना विश्वास किया था? परन्तु आज कुन्ती ने पुनः वही बात दोहरा कर कर्ण को विश्वास दिलाना चाहा कि-

कृष्ण ने जो वचन तुम्हें दिए हैं उन पर आँखें बन्द करके विश्वास कर सकते हो। परन्तु कर्ण ने इस सारी बात का बड़ा भी अद्भुत उत्तर दिया, देखिये-

---

*यह आकाशवाणी का करिश्मा कृष्ण के द्वारा किया गया प्रबन्ध था, जिससे कि कर्ण किसी तरह जाल में फंस जाये।

-लाजपत राय अग्रवाल (वैदिक मिशनरी)

Pinku Pradhan

अभ्राता विदितः पूर्व युद्धकाले प्रकाशितः।

(महाभारत उद्योग पर्व १४६/१०-२४२८)

आज तक तो किसी को पता नहीं था कि- **मैं कौन्तेय हूँ और भाइयों वाला हूँ** पर आज युद्ध सिर पर आ गया तो यह सम्बन्ध प्रकट हो गया?

भाइयो! इससे तीखा व्यंग्य और कोई कैसे करेगा? कर्ण ने सब कुछ एक ही वाक्य में कह दिया। कौन्तेय होने का निषेध भी कर दिया और युक्ति भी साथ दे दी। युद्ध ने मुझे भाइयों वाला भी और कौन्तेय भी बना दिया। मुसीबत में तो लोग न जाने कहां से कहां तक गिर जाते हैं।

शायद वह कहना चाह रहा था कि-

कुन्ती! यह युद्ध की मजबूरी है कि तुम्हें मुझे कौन्तेय कहना पड़ रहा है। अन्यथा आज तक तो किसी को पता नहीं था कि- **मेरे कोई भाई भी हैं?**

कृष्ण ने जब कर्ण से बात की थी तो तब कर्ण हर बात में हाँ-हाँ तुम ठीक कहते हो, की रट लगा रहा था। हाँ! मैं कौन्तेय हूँ, मुझे पता है, मैं भी यह जानता हूँ, आदि कहकर बहस में उलझने से अपने को बचाता रहा था। परन्तु कुन्ती से जो कुछ उसने अब कहा था उससे हमारी बात की पुष्टि हो

Pinku Pradhan

जाती है कि-

उसे कानीन पुत्र बना कर वास्तव में रिश्वत दी जा रही थी।

कर्ण के इस तीखे व्यंग्य ने भी कुन्ती को विचलित नहीं किया वह वहीं अपनी बात पर जयों की त्यों डटी रही। वह कर्ण के दरबार में आई थी और कोई अबला माता बन कर कर्ण से कुछ मांगने आए और कर्ण जैसे दानी के द्वार से खाली हाथ लौट जाए यह तो कर्ण की परम्परा के विरुद्ध होता। इसलिए कुन्ती की सारी बात सुनने के पश्चात कर्ण ने उदारतापूर्वक कह ही तो दिया कि-

हे देवी! तुम चिन्ता न करो। मेरे पास तुम व्यर्थ नहीं आई हो। तुम्हारे पांच पुत्र बने रहेंगे। मैं मारा गया तो अर्जुन सहित पांच और अर्जुन मारा गया तो मेरे सहित पांच। मैं आश्वासन देता हूँ युद्ध में काबू आ जाने पर भी तेरे शेष चार पुत्रों को मैं नहीं मारूंगा। देखिये-

(महाभारत उद्योग पर्व १४६/२३-२४२१)

बस! कुन्ती का इतना सुनना था कि उसकी तो बाँछे खिल गई, जैसे डूबती नाव को पतवार मिल गयी। अपने मन की बात को हजार बार छिपाना चाहा होगा। फिर भी वह जिव्हा

Pinku Pradhan

पर आ ही गई। वह भूल गई कि मैं तो केवल अभिनय कर रही हूँ और बोली-

त्वया चतुर्णाभ्रातृणामभयं शत्रुकर्शन।
दत्तं तत् प्रतिजानीहि संगरप्रतिमोचनम्।।

(महाभारत उद्योग पर्व १४६/२६-२४२९)

हे कर्ण! देव बड़ा प्रबल है। हे शत्रु सूदन! तूने अपने चार भाइयों को अभयदान दिया है। युद्ध के समय इस बात को भूल मत जाना। दृढ़प्रतिज्ञ रहना। जब कर्ण ने तथास्तु कह दिया, तो कुन्ती वापिस लौट गई।

हमने बालपन में, एक कथा पढी थी कि-

जब एक राजा ने निर्णय दिया कि अगर यह पता लगाना असम्भव है कि इस बच्चे की असली माता कौन है? तो उस बालक को बीच में से चीर कर इसके दो टुकड़े कर दिया जायें और दोनों माताओं को उसमें से एक एक टुकड़ा दे दिया जाये, तो उसकी माता का पता चल जायेगा।

बस! इतना सुनना था कि असली माता फफक-फफक कर रो पड़ी और बड़े जोर से चीखी कि ये बच्चा मेरा नहीं है, उसका है। बच्चे को चीरो मत उसी को दे दो। परन्तु कुन्ती तो अदभुत माता है। कर्ण और अर्जुन में एक को बली चढ़ाने को

Pinku Pradhan

उद्यत हो गई। क्या दोनों उसके पुत्र नहीं हैं? चाहे एक को सूर्यदेव से प्राप्त किया हो और दूसरे को इन्द्रदेव से! पर जननी तो वह दोनों की थी।

परन्तु भाइयों! जबकि- **वास्तविकता तो यह थी कि वह कर्ण की माता थी ही नहीं।** कुन्ती को पूरा विश्वास था कि मेरा पुत्र अर्जुन कर्ण पर भारी पड़ेगा और जिन बाकी चार पुत्रों के लिए कर्ण से उसे भय था जो कर्ण की गोद का चबेना मात्र थे, जिन्हें कर्ण जब चाहता तभी उनका कलेवा कर जाता।

कुन्ती ने आज कर्ण से उन चारों के लिए तो अभय दान प्राप्त कर लिया था, और इस प्रकार उसने अपने पांचों पुत्रों को सुरक्षित कर लिया था और भीष्म तो पहले ही प्रतिज्ञा कर चुके थे कि हम युद्ध में कुन्ती के पुत्रों की हत्या नहीं करेंगे, देखिये महाभारत का वचन भी है कि-

सर्वास्त्वन्यान् हनिष्यामि पार्थिवान् भरतर्षभ।
यान् समेष्यामि समरे न तु कुन्तीसुतान् नृप॥

(महाभारत उद्योग पर्व १७२/२१-२४१३)

□□□

Pinku Pradhan

कृष्ण की नीति

उपर्युक्त समस्त विवेचन प्रामाणिक है, मन की कल्पना नहीं है। इसमें कृष्ण की साक्षी है। कृष्ण जब कौरव सभा से वापिस लोटे तब पाण्डवों ने पूछा -

हमें बताइये वहाँ क्या हुआ?

कृष्ण बोले -

सुनो! जब मैंने देखा कि दुर्योधन किसी भी प्रकार मेरी बात को मानने के लिए तैयार नहीं है तो मैंने भेद नीति का आश्रय लिया और वहां आये हुए राजाओं में फूट डालने का प्रयत्न किया।

पुनर्भेदश्च में युक्तों यदा साम न गृह्यते।

(महाभारत उद्योग पर्व १५०/९२४३९)

वहाँ मैंने बहुत अद्‌भुत, भयंकर, निष्ठुर एवं अमानुषिक कार्य किए, देखिये-

अद्‌भुतानि च घोराणि दारुणानि च भारत।
अमानुषाणि कर्माणि दर्शितानि मया विभो॥

(महाभारत उद्योग पर्व १५०/९१-२४३९)

श्रीकृष्ण की इस उक्त के पश्चात् हम अधिक बहस में

Pinku Pradhan

नहीं जाना चाहेंगे। कृष्ण द्वारा कर्ण को कानीन पुत्र बताने का सारा रहस्य खुल चुका है। कृष्ण द्वारा भेदनीति का सहारा लेकर कर्ण को तोड़ने के लिए कृष्ण को किस सीमा तक जाना पड़ा? यह स्पष्ट हो चुका है।

कृष्ण बिना युद्ध के ही अपनी विजय निश्चित करना चाहते थे। लाखों बहनें अपने भाई खो दें, लाखों बालक अनाथ हो जायें, लाखों महिलाओं के माथे से सिन्दूर मिट जाए, यह सब कृष्ण टालना चाहते थे। और इसके लिए वे युधिष्ठिर के सिर पर रक्खे हुए राजमुकुट को उतार कर उस मुकुट को कर्ण के सिर पर सजाने को भी उद्यत हो गये थे।

Pinku Pradhan

रंगभूमि

रंगभूमि में कर्ण की उपस्थिति

शान्ति पर्व और आदि पर्व के कुछ प्रसंग कर्ण से सम्बन्धित हैं। जब तक वे उलझनें समाप्त न हो जाएं– तब तक कर्ण के विषय में सन्देह बना रह सकता है।

देखिये महाभारत के आदि पर्व में आया है कि–

रंगभूमि उत्सव के समय कर्ण के शौर्य से प्रभावित होकर और यह प्रश्न उठने पर कि उत्सव में केवल राजकुमार ही भाग ले सकते हैं, तब क्या हुआ–

दुर्योधन ने कर्ण को अपना बनाने के लिए रंगभूमि में ही, उसे अंगदेश का राजा घोषित कर दिया। इस घोषणा से कर्ण न केवल अंगदेश का राजा हो गया अपितु दुर्योधन का अपना प्यारा भी हो गया।

जब आप पूरा वर्णन पढ़ लेंगे, तो हमारा विश्वास है कि आप स्वयं स्वीकार कर लेंगे कि रंगभूमि में कर्ण की उपस्थिति और उससे सम्बन्धित समस्त वर्णन काल्पनिक और कालान्तर

की मिलावट है।

हम पुनः महाभारत के कुछ पन्ने पलटना चाहेंगे और उन पर अन्वेषणात्मक दृष्टिपात करते हैं, देखिये-

कर्ण तो जन्म से ही अंगदेश का राजकुमार था

(१) हमने आगे एक वंशावली दी है उससे स्पष्ट हो जायेगा कि बलि राजा के पाँच पुत्रों के नाम से पाँच ही जनपद बसे थे। ये जनपद इस प्रकार थे-

अंग

बंग

सुह्य

कलिंग

पुण्ड्र

कर्ण का सम्बन्ध उसी अंग देश के राज वंश से है। कर्ण इसी राजकुल में जन्मा था। वह तो जन्म से ही अंग देश का राजकुमार था।

Pinku Pradhan

(२) मगध नरेश जरासंध ने कभी अंग देश के कुछ भाग पर अपना अधिकार कर लिया था, परन्तु कर्ण ने अपना यह राज्य जरासंध से युद्ध करके वापिस ले लिया था। जरासंध ने बाध्य होकर अंग देश की राजधानी मालिनी कर्ण को वापिस लौटा दी।

महाभारत के शान्ति पर्व में आया है कि-

कर्ण के बल की ख्याति सुनकर जरासंध ने कर्ण को द्वैरथ युद्ध के लिए ललकारा। दोनों में भयंकर युद्ध हुआ।

कर्ण ने युद्ध में जरासंध पर काबू पा लिया और जरासंध की संधियों को फाड़ना आरम्भ किया। दोनों में भयंकर युद्ध हुआ।

(महाभारत शान्ति पर्व ५/४-४४३४)

जरासंध ने वैरभाव को मन से हटा कर कर्ण से कहा था कि-

कर्ण! मैं तुमसे बहुत प्रसन्न हूँ। इसी के साथ ही उसने प्रसन्नतापूर्वक अंगदेश की राजधानी मालिनी नगरी कर्ण को वापिस सौंप दी। नरश्रेष्ठ शत्रुविजयी कर्ण तभी से अंगदेश का राजा हो गया।

Pinku Pradhan

इसके पश्चात् दुर्योधन की अनुमति से सैन्य-संहारी कर्ण, चम्पा नगरी अर्थात् चम्पारण का पालन भी करने लगा, यह सब तो तुम्हें ज्ञात है।

प्रत्याददौकर्णाय मालिनीं नगरीमथ।
अंगेषु नरशार्दूल स राजाऽऽसीत् सपत्निजित्॥

(महाभारत शान्ति पर्व ५/६-४४३४)

पालयामास चम्पां च कर्णः परबलार्दनः।
दुर्योधनस्यानुमते तवापि विदितं तथा॥

(महाभारत शान्ति पर्व ५/७-४४३४)

नारद जी युधिष्ठिर को कथा सुनाते हुए इतना कुछ बता गए। इस वर्णन से यह बात स्पष्ट हो गई कि रंगभूमि में कर्ण को दुर्योधन द्वारा अंगपति बनाने और राज्याभिषेक करने की बात गप्प और पीछे की मिलावट है।

अभिषिक्तो अंगराज्ये स श्रिया युक्तो महाबल।

(महाभारत आदि पर्व १३५/३८-४१२७)

कर्ण तो अंगराज के घर में जन्मा था। जरासंध से युद्ध करके उसने अपने बाहुबल से अपनी राजधानी वापिस छीनी थी।

(३) हम अपने विद्वान पाठकों को एक बात और स्मरण

Pinku Pradhan

करा देना चाहेंगे कि दुर्योधन अभी स्वयं एक साधारण राजकुमार था। राजा का सम्पूर्ण कार्य भार धृतराष्ट्र सम्पादन करता था। दुर्योधन ने किस हैसियत और किस अधिकार से कर्ण को अंगदेश का राजा बना दिया? उस दुर्योधन के पास ऐसा कोई अधिकार था ही नहीं कि वह किसी को राजा बना सकता।

यह तो ठीक वैसी ही गप्प है जैसी हम आगे महाभारत में पढ़ते हैं कि–

सहायता के लिए कृष्ण के पास दुर्योधन पहले पहुँचा कृष्ण जी सोये हुए थे, और कृष्ण के सिरहाने जाकर बैठ गया। अर्जुन पीछे आया और वह कृष्ण के पैरों की ओर बैठ गया। कृष्ण जी जब नींद से जागे तो उन्होंने अर्जुन को पहले देखा और उसे कह दिया कि छाँट लो! एक ओर तो मैं अकेला निहत्था हूँ मैं कोई भी हथियार युद्ध में नहीं उठाऊंगा, तथा दूसरी ओर समस्त हथियारों से सुसज्जित यह विशाल अठारह अक्षौहिणी यादव सेना है परन्तु अर्जुन ने बिना कुछ विचार किये निहत्थे कृष्ण को अपने लिए चुन लिया, अन्ततः दुर्योधन को सारी विशाल हथियारों से सुज्जित यादव सेना प्राप्त हो गई, जिसे पाकर उसकी खुशी का कोई ठिकाना न रहा।

साधारण पाठक जब इस प्रकरण को पढ़ता है तो खुशी

Pinku Pradhan

से झूमने लगता है कि अर्जुन ने ये क्या समझदारी की? अकेले को चुन लिया और वह भी निहत्था! परन्तु कृष्ण की सूझ-बूझ को प्रत्येक व्यक्ति भली भाँति जानता है, जिसके आगे अठारह अक्षौहिणी सेना तो क्या इससे दो गुणा भी हो, तो भी तुच्छ है।

हम आपसे पूछना चाहते हैं कि यह समस्त छाँट का वर्णन क्या आपकी बुद्धि को स्वीकार है? द्वारिका का राजा था कंस का पिता उग्रसेन। उस समय कृष्ण द्वारिका के राजा भी नहीं थे। फिर कृष्ण को यह निर्णय करने का अधिकार कैसे मिल गया कि दुर्योधन को वह विशाल अठारह अक्षौहिणी सारी यादव सेना दुयोधन को दे देते?

महाभारत का यह वर्णन वास्तव में अलंकारिक और साहित्यिक वर्णन है। जिसे कृष्ण की महत्ता को प्रकट करने के लिए इसे अतिश्योक्ति के आधार पर कृष्ण का महत्व बढ़ाने के लिए किसी दूसरे ही रंग में लिखा गया है, जो सच्चाई से कोसों दूर है। जबकि वास्तविकता यह है कि-

द्वारिका की सेना कौरवों के पक्ष में थी। उन्होंने निर्णय कर दिया था कि कोई भी यादव सैनिक आने वाले युद्ध में पाण्डवों की ओर से हथियार नहीं उठाएगा और सारी यादव सेना युद्ध में केवल कौरवों का ही साथ देगी।

Pinku Pradhan

सम्पादक की ओर से दी गई विशेष टिप्पणी-

इस पूरे प्रकरण को आप अन्वेषणात्मक व तार्किक बुद्धि से विचारें, और तब निर्णय लें, दोनों युद्ध से पहले दुर्योधन व अर्जुन कृष्ण जी के पास युद्ध में सहायता के लिए जाते हैं, अर्थात्-तो वर्तमान, महाभारत में दिये गये विवरण पर निम्न सवाल खड़े होते हैं, देखिये-

१. क्या दोनों ने कृष्ण से मिलने का एक ही समय निर्धारित किया था, अर्थात् थोड़े समय के अन्तर से मिलने का समय नियत किया था?

२. आजकल भी कहीं कोई सामान्य व्यक्ति किसी से मिलने जाता है तो पूर्व समय लेकर ही जाता है।

३. क्या वहां दरबान आदि कोई नहीं था, जो आगन्तुकों के आने की सूचना अन्दर महल में देता?

४. अगर कृष्ण जी सो रहे थे तो भी आगन्तुकों के लिए उन्हें प्रतीक्षा करने हेतु बैठने के लिए वहां कोई स्थान नहीं था, केवल वहीं एक कमरा था, जिसमें कृष्ण जी सोते थे और आने वाले भी उनके इर्द-गिर्द वहीं उसी कमरे में बैठ जाते थे।

Pinku Pradhan

५. क्या दुर्योधन को इतनी भी समझ नहीं थी कि कहां बैठना चाहिये? और वह वहां किस चीज पर बैठा था?

६. अर्जुन अगर थोड़ा बाद में भी गये थे तो तब भी कृष्ण जी सोये हुए थे- अतः पता लगता है कि कुछ समय तक दुर्योधन व अर्जुन आमने-सामने चुपचाप बैठे रहे, क्या यह सम्भव हो सकता है?

७. जिस कार्य के लिये वह दोनों गये थे, क्या उस कार्य की सिद्धि दोनों की विद्यमानता में सहायक सिद्ध होती है? कदापि नहीं।

८. पहले अर्जुन को देखा तो पहले उसे ही मौका दिया गया और उसके सामने दो विकल्प रक्खे जिसमें एक सेना का भी था, जबकि सेना उनकी थी ही नहीं।

९. अतः साफ पता चलता है कि यह कहानी कथाकार की अपनी मनघड़न्त है, जिसमें कोई सार नहीं है।

अतः साफ पता चलता है कि एक सीधी सादी बात को एक कवि और कृष्ण भक्त ने उसे साहित्यिक रंग देकर प्रस्तुत कर दिया तो पढ़ने वालों का कर्तव्य हो जाता है कि उसकी गहराई को छूने का प्रयत्न अवश्य करें।

Pinku Pradhan

यह तो कृष्ण की महानता है कि इतनी भयंकर विपरीत परिस्थितियों में यादव सेना के विरोध में रहते हुए भी स्वयं हथियार न उठा सकने का व्रत धारण करके भी कृष्ण पाण्डवों को युद्ध में विजयी बना ले गये।

-लाजपत राय अग्रवाल
(वैदिक मिशनरी)

हम फिर अपने पूर्व विषय पर वापिस लौटते हैं, देखिये वहां की भी स्थिति को देखते हुए स्पष्ट है कि-

दुर्योधन तो कर्ण का राज्याभिषेक कर ही नहीं सकता था। वह तो अन्य अनेक राजपुत्रों की तरह स्वयं एक छात्र मात्र था और कर्ण पहले से ही अंग देश का राजा था। इसलिए हमारा मानना है कि रंगशाला में कर्ण की समस्त उपस्थिति अर्थात् भूमिका एक दम काल्पनिक है। इस पर भी यदि आप कर्ण को रंगशाला में देखना ही चाहते हैं तो अवश्य देखिए।

उस समय रंगशाला उत्सव पर कर्ण की आयु कम से कम ८७-८८ वर्ष तो अवश्य रही होगी। लीजिए हम महाभारत से कर्ण की आयु निकालने का प्रयत्न करते हैं। पहले देखिए

Pinku Pradhan

युद्धारम्भ के समय युधिष्ठिर की आयु कितनी थी?

१. कुन्ती जब पाण्डवों को वन से लेकर आई तब युधिष्ठिर १९ वर्ष का था तथा अर्जुन का पन्द्रहवां जन्मदिन था- जिस दिन पाण्डु की मृत्यु हुई थी।

२. आचार्य द्रोण से युद्ध-विद्या सीखने में लगेंगे न्यून से न्यून दस वर्ष।

३. तब गुरुदक्षिणा के लिए द्रुपद को बन्दी बनाकर लाने में लगे होंगे २ वर्ष।

४. वारणावत में भवन-निर्माण और युवराज-पद की घोषणा में दो वर्ष।

५. वारणावत में वास, द्रौपदी-स्वयंवर तक, कम से कम दो वर्ष।

६. धृतराष्ट्र ने स्वयंवर के एक वर्ष पश्चात् हस्तिनापुर बुलाया।

७. खाण्डवप्रस्थ बंटवारे में मिला जो उस समय उजाड़ खण्डहर मात्र था और जिस स्तर की राजधानी उसे बनाया गया उसके लिए तो कम से कम पच्चीस वर्ष।

८. तब युधिष्ठिर ने राजसूय यज्ञ किया और दिग्विजय प्राप्त

Pinku Pradhan

की, उसके लिए कम से कम दस वर्ष।

९. जुए का निमंत्रण उसके - एक वर्ष के बाद।

१०. बारह वर्ष का वनवास तथा एक वर्ष का अज्ञातवास इस प्रकार हुए तेरह वर्ष।

११. देशभर में महायुद्ध की तैयारी जिसके लिए कम से कम दो वर्ष

इस प्रकार कुल वर्ष हुए -

१९+१०+२+२+२+१+२५+१+१+१०+१३+२

योग = सत्तासी वर्ष

युद्धारम्भ के समय युधिष्ठिर कम से कम ८७ वर्ष का था। कर्ण कम से कम युधिष्ठिर से १५ वर्ष बड़ा था। यानी ८७+१५ अर्थात् १०२ वर्ष का रहा होगा।

कुन्ती कुवांरी थी, जब कर्ण का जन्म हुआ बताते हैं, साफ जाहिर है कि वह नवयुवती ही रही होगी, तब बाद में पाण्डु से विवाह हुआ होगा, पाण्डु ने दसियों वर्ष दिग्विजयें कीं- सन्तान न होने पर तब दूसरा विवाह माद्री से किया होगा। २-४ वर्ष तक सन्तान की प्रतीक्षा की होगी। सन्तान न होने पर तब वन में जाकर नियोग से संतानें प्राप्त की होंगी। इस पूरी

Pinku Pradhan

जीवन यात्रा में कम से कम पन्द्रह वर्ष तो अवश्य ही लगे होंगे।

उधर कर्ण अपना सम्बन्ध दुर्योधन से केवल १३ वर्ष मानता है। युद्धारम्भ से तेरह वर्ष पूर्व से, देखिये-

वह कृष्ण से कहता है कि - कृष्ण! मैं दुर्योधन का साथ छोड़ नहीं सकता।

मया त्रयोदश समा युक्तं राज्यमकण्टकम्।
धृतराष्ट्रकुले कृष्ण दुर्योधनसमाश्रयात्।।

(महाभारत आदि पर्व १४१/१३-२४१७)

मैं धृतराष्ट्र के कुल में, दुर्योधन का आश्रय पाकर तेरह वर्ष से अकण्टक राज्य सुख का उपभोग कर रहा हूँ। मैं उस दुर्योधन को धोखा नहीं दूँगा।

आगे देखिये-

माता गांधारी की साक्षी भी यही है कि कर्ण उनके साथ तेरह वर्ष से बन्धा हुआ है। वह युद्धभूमि में पड़े हुए वीरों के क्षत-विक्षत शरीरों को देखती है-

तब कर्ण के शव को देखकर उसके मुख से अनायास ही निकल पड़ा- हा! माधव! जिससे भयभीत रहने के कारण चिन्ता के मारे धर्मराज युधिष्ठिर को तेरह वर्ष नींद नहीं आई,

Pinku Pradhan

जो युद्धभूमि में शत्रु के लिए इन्द्र के समान अजेय था, जो धृतराष्ट्र-पुत्र दुर्योधन की शरणस्थली था, वह कर्ण भी आज मृत्यु को प्राप्त होकर आँधी से टूटे हुए विशाल वृक्ष के समान इस भूमि पर पड़ा हुआ है।

त्रयोदश समां निद्रां चिन्तयन् नाध्यगच्छत्।

(महाभारत २१-७-४४१०)

स्पष्ट है तेरह वर्ष पूर्व से ही दुर्योधन और कर्ण की मित्रता थी। दुर्योधन की कृपा से उसी समय से वह अकण्टक राज्य का उपभोग कर रहा है।

मित्रता अगर रंगमंच वाले दिन से जुड़ी है तो मानना पड़ेगा कि १३ वर्ष पूर्व ही रंगमंच सजा था (१०२-१३=८९) इस प्रकार उस समय कर्ण ८८-८९ वर्ष का अवश्य रहा होगा। हम नहीं समझते कि ८८-८९ वर्ष के कर्ण को आप रंगभूमि में देखना स्वीकार करेंगे।

इसके अतिरिक्त सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि जब पाण्डव और कौरव सभी राजकुमार, आचार्य द्रोण से विद्या पाकर सफल-मनोरथ हो गए तब भीष्म, व्यासदेव, विदुरादि की उपस्थिति में, आचार्य द्रोण ने राजा धृतराष्ट्र से निवेदन

Pinku Pradhan

किया था कि-

राजन् सम्प्राप्तविद्यास्ते कुमाराः कुरुसत्तम।
ते दर्शयेयुः स्वां शिक्षां राजन्ननुमते तव॥

(महाभारत आदि पर्व, १३३-३-४०४)

हे राजन! आपके कुमार अस्त्रविद्या की पूर्ण शिक्षा प्राप्त कर चुके हैं। हे कुरुश्रेष्ठ! यदि आपकी अनुमति हो तो अपनी-अपनी सीखी हुई विद्या अर्थात् अस्त्रकला का प्रदर्शन आरम्भ करें।

राजा ने अनुमति प्रदान करते हुए कहा-

आपने राजकुमारों को अस्त्र-विद्या सिखा कर बहुत बड़ा कार्य सम्पादन कर दिया। हे आचार्य प्रवर! मैं तो अभागा नेत्रहीन हूँ, इसके बावजूद भी मैं इस दिन को देखने के लिए कब से तरस रहा हूँ। इसका आप अनुमान नहीं लगा सकते। हाँ! वे लोग धन्य हैं जो भाँति-भाँति का पराक्रम करने वाले मेरे पुत्रों के अस्त्र-संचालन के कला-कौशल को अपनी अपनी आँखों से निहारेंगे।

स्पृहयाम्यद्य निर्वेदात् पुरुषाणां सचक्षुषाम्।
अस्त्रहेतोः पराक्रान्तान् ये मे द्रक्ष्यन्ति पुत्रकान्॥

(महाभारत आदि पर्व १३३-६/४०५)

Pinku Pradhan

अब तो पाठकगण समझ गए होंगे कि यह संसार का सर्वश्रेष्ठ वीर चुनने के लिए खुली स्पर्धा अर्थात् Open Competition नहीं है कि जो चाहे उसमें भाग ले ले। यह तो केवल उन राजकुमारों अर्थात् कौरवों-पांडवों के लिए है, जिन्होंने मात्र आचार्य द्रोण से शिक्षा प्राप्त की थी। इसलिए इसमें कर्ण की उपस्थिति एकदम भ्रामक, कपट, और धोखा मात्र है। मिलावट है।

कर्ण के सम्बन्ध में कुछ ज्ञातव्य भ्रान्तियाँ

(१) बताया जाता है कि कर्ण ने भी द्रोणाचार्य से ही शिक्षा प्राप्त की थी।

(महाभारत २/५/४४२८)

(२) दुर्योधन और कर्ण के मध्य बाल्यकाल में ही मित्रता हो गई थी, तथा स्वभाव से ही कर्ण पाण्डवों से द्वेष रखता था।

(महाभारत २/८/४४२८)

(३) भीमसेन का बल-अर्जुन की फुर्ती, नकुल सहदेव

Pinku Pradhan

का विनय-अर्जुन की बचपन से श्रीकृष्ण से मित्रता, और पाण्डवों के प्रति प्रजा का अनुराग देखकर कर्ण चिन्ता में डूबकर ईर्ष्याग्नि से सदा जलता रहता था।

(महाभारत ६/७/४४२६)

उपर्युक्त समस्त वर्णनों को यदि तर्क की कसौटी पर कस कर देखा जाये तो सारे प्रक्षेपक हवा में घास के तिनकों के तरह उड़ जायेंगे।

● द्रोणाचार्य को कर्ण का गुरु बताना स्वयं एक बेपर की उड़ान है। रंगशाला का वर्णन हमारी बात की पुष्टि करता है। देखिये-

उस समय कर्ण को रंगशाला में उपस्थित देखकर सभी राजा लोग निश्चल होकर एकटक यह देख रहे थे कि आखिर यह शूरवीर कौन है? उसे जानने के लिए उनका चित्त चंचल था तथा वे सब राजा लोग उत्कण्ठा से भरे हुए थे, देखिये-

स समाजजना: सर्वो निश्चल: स्थिरलोचना:।
कोऽयमित्यागत क्षोम: कौतूहल परोऽभवत्॥

(महाभारत आदि पर्व, १३५/७/४१०)

अर्जुन ने जब यह पूछा कि-

Pinku Pradhan

सभा में बिना बुलाए जाने वाला यह व्यक्ति कौन है? तो कर्ण ने उत्तर दिया-

साहस हो तो अपने बाणों से पूछो। मैं आज तुम्हारे गुरु के सामने ही तुम्हारा सिर धड़ से अलग कर दूँगा, देखिये-

तो गुरोः समक्षं यावत् हराम्यद्य शिरः शरैः।

(महाभारत आदि पर्व १३५-२०-४११)

इस समस्त सन्दर्भ से यह स्पष्ट हो जाता है कि-

कर्ण द्रोणाचार्य का शिष्य नहीं है। द्रोण का शिष्य हो और वह भी ऐसा शिष्य हो जो धनुर्विद्या में अर्जुन को ललकार सके, क्या सम्भव है कि नगर के लोग उसे पहचानते भी न हों? अर्जुन खुद भी पूछ रहा है कि-

तुम कौन हो?

यदि कर्ण द्रोण का शिष्य होता तो ये शब्द-

आज तुम्हारे गुरु के सामने तुम्हारा सर धड़ से अलग कर दूँगा।

ऐसे शब्द उसके मुख से निकल ही नहीं सकते थे। वह द्रोण को अपना गुरु नहीं मानता, द्रोण को केवल अर्जुन का गुरु मानता है।

Pinku Pradhan

● श्री कृष्ण और अर्जुन की मित्रता से कर्ण को जलन होती थी और वह मन ही मन कुढ़ता रहता था, ऐसा कहना भी तथ्यों के एकदम विपरीत है। श्रीकृष्ण और अर्जुन की मित्रता तो दूर वे तो एक दूसरे के पास से निकल जाते तो भी एक दूसरे को पहचान तक न सकते थे।

महाभारत का पारायण करने वाला प्रत्येक पाठक जानता है कि स्वयंवर में द्रौपदी को जीत लेने पर केवल इस अनुमान के बल पर कि शल्य को पटकने वाला बलराम, दुर्योधन या भीम के अलावा कोई सुना नहीं गया और क्योंकि बलराम ये है नहीं दुर्योधन भी यह नहीं है, बस! यह भीम ही हो सकता है।

तब कृष्ण ने बलराम से कहा था-

संभव है, नहीं नहीं, पूरा विश्वास हो गया है कि वह धनुर्धारी जिसने स्वयंवर जीता है वह अर्जुन ही होगा। पाँचों पाण्डव अवश्य जीवित हैं और तब अपनी बात की जाँच करने के लिए कृष्ण ने उस धनुर्धर और द्रौपदी का पीछा किया।

यह कृष्ण और अर्जुन का प्रथम मिलन है। उससे पूर्व वे यह तो जानते थे कि हमारे मामा का पुत्र कृष्ण है यह हमारी बुआ के लड़के पाण्डव हैं पर एक दूसरे की मित्रता जैसी कोई

Pinku Pradhan

बात नहीं थी। और रंगभूमि के संदर्भ में यह बताया जा रहा है कि कर्ण तो बचपन से ही अर्जुन और कृष्ण की मित्रता से जलता था।

रंगभूमि में कर्ण की उपस्थिति का प्रसंग एक घृणित योजनाबद्ध मिलावट है जो कुन्ती को अपमानित करने वालों ने इरादतन की है।

अब सुनिये-

कर्ण, परशुराम का शिष्य था। परशुराम द्वारा शाप दिए जाने की घटना का वर्णन महाभारत में इस प्रकार आया है कि-

एक बार परशुराम जी कर्ण की जाँघ पर सिर रख कर सो गए। एक तीक्ष्ण दांतों वाले कीड़े ने कर्ण की जाँच पर अपने दांत गड़ा दिए, खून की धारा बह निकली। जब गरम-गरम लहू गुरुजी के शरीर से छुआ तो वे नींद से जग गए। खून बहता हुआ देखकर वे सब कुछ समझ गए और बोले- ऐ मूर्ख! ऐसा भारी दुख ब्राह्मण कभी सहन नही कर सकता। तेरा धैर्य तो क्षत्रिय के समान है, तू स्वेच्छा से सत्य-सत्य बता कि- तू कौन है?

कर्ण शाप के भय से भयभीत हो गया। उन्हें प्रसन्न करने के लिए सत्य बात बता दी कि हे भार्गव! आप यह बात जान

Pinku Pradhan

लें कि मैं ब्राह्मण और क्षत्रिण से भिन्न सूत जाति में पैदा हुआ हूँ। हे ब्राह्मण! भृगुनन्दन! मैंने अस्त्रविद्या का ज्ञान प्राप्त करने के लोभ में झूठ बोला था कि मैं ब्राह्मण हूँ, अतः आप मुझे क्षमा करें, देखिये-

तमुवाच ततः कर्णः शापद्भीतः प्रसादयन्।
ब्रह्मक्षत्रान्तरेजातं सूतं मां विद्धि भार्गव।।

(महाभारत आदि पर्व ३/२६-४४३०)

राधेय कर्ण इति माँ प्रवदन्ति जना भुवि।
प्रसादं कुरु मे ब्रह्मन्नस्त्रलुब्धस्य भार्गव।।

(महाभारत आदि पर्व ३/२६-४४३१)

कर्ण ने एकदम स्वीकार कर लिया कि मैं अस्त्रविद्या सीखने के लोभ में अपने को भार्गव गोत्रीय ब्राह्मण जो बताया था, वह झूठ था। मुझे क्षमा करें। गुरुवर! अपना क्रोध त्याग कर मुझ पर प्रसन्न हों।

यह मनोविज्ञान का विषय है, यदि कर्ण कुन्ती का पुत्र होता तो यह कहता कि मेरे पिता और माता दोनों क्षत्रिय हैं। मैं कुन्ती देवी से उत्पन्न सूर्यदेव का पुत्र हूँ, अधिरथ सूत ने मुझे पाला है। राधादेवी की गोद में पला हूँ और क्षत्रिय सिद्ध हो जाने पर उसे ब्रह्मास्त्र प्राप्त करने का अधिकार प्राप्त हो जाता, गुरु

Pinku Pradhan

को शाप भी न देना पड़ता क्योंकि क्षत्रिय भी ब्रह्मास्त्र का अधिकारी है। द्रोण ने इस विषय में स्पष्ट कहा था-

ब्रह्मास्त्रं ब्राह्मणो विद्यात् यथावत् चरितव्रतः।
क्षत्रियो वा तपस्वी यो नान्यो विद्यात् कथंचन॥

(महाभारत आदि पर्व २/१३/४४२८)

बस! ब्रह्मास्त्र को ठीक-ठीक ब्रह्मचर्य व्रतधारी ब्राह्मण ही जान सकता है अथवा तपस्वी क्षत्रिय जान सकता है। संसार में इनके अतिरिक्त अन्य दूसरा कोई भी व्यक्ति किसी तरह से भी जान नहीं सकता।

स्पष्ट है कर्ण यदि ब्राह्मण या क्षत्रिय होता तो उसे अपने को परशुराम जी से छिपाने की जरूरत ही नहीं थी। वह सूतवंश में जन्मा था। अपने को सूत ही मानता था और यह सत्य बात उसने परशुराम जी से कह भी दी थी।

यदि गुरु के पास आते समय उसने कुछ ग़लत बात कह भी दी होती तो आज शाप से बचने के लिए तो सत्य बात कह देने के अतिरिक्त उसके पास अन्य कोई दूसरा मार्ग नहीं था।

हमारे एक मित्र कहने लगे-

कर्ण अपने को कुन्ती का कानीन पुत्र कैसे बता सकता

Pinku Pradhan

था? ऐसा कहकर वह खुद को दूसरों की नज़रों में गिरा न लेता?

हमारा कहना है कि कर्ण अगर इतनी लम्बी नाक वाला होता तो उसने कृष्ण के सामने क्यों स्वीकार कर लिया था कि-

मैं कुन्ती का कानीन पुत्र हूँ?

उस समय जब कृष्ण ने कहा था-

तू कानीन है, तो उसे कहना चाहिए था-

कृष्ण! मैं तुम्हारा मान करता हूँ लेकिन तुम्हें मुझे ये गाली देने का अधिकार नहीं है।

उसे कहना चाहिए था-

कृष्ण! ऐसी गन्दी बात मेरे और मेरी माता के लिए यदि दोबारा तुम्हारी जुबान से निकली तो अर्जुन से पहले मैं तुम्हारा सिर काटूँगा। पर वह तो हाँ - हाँ करता रहा और जब कहा कि-

आज की बात गुप्त रहे तो कृष्ण को यह भी बता दिया कि क्यों गुप्त रहे? ये नहीं कहा कि मैं इसे गाली समझता हूँ, अपमान और पाप जानता हूँ, इसलिए बात अपने तक ही सीमित रखना।

Pinku Pradhan

उसने तो कहा-

यदि कोई शब्द तुम्हारे मुख से निकल गया तो युधिष्ठिर को खबर हो जाएगी, और जब युधिष्ठिर जान जायेगा कि वह कर्ण का भाई है तो वह लड़ेगा नहीं और राजा मुझे बना देगा। और मिला हुआ राज्य मैं दुर्योधन के चरणों में रख दूँगा।

कहाँ है कर्ण को कुन्ती-पुत्र कहलाने में झिझक? वह कुन्ती का कानीन पुत्र था ही नहीं इसलिए जब कृष्ण उसे कानीन कह रहा था तो वह जानता था **'कानीन'** राजनैतिक सौदेबाज़ी अर्थात् रिश्वत का एक कोड नं0 है।

जब परशुराम ने पूछा तो सत्य बता दिया कि मैं सूत पुत्र ब्राह्मणी माता में क्षत्रिय पिता से जन्मा हूँ, देखिये महाभारत का वचन है कि-

ब्राह्मणयां क्षत्रियाज्जातः सूतो भवति पार्थिवः।
प्रति लोम्येन जातानाम् स एकोद्विज एव तु।।

(महाभारत आदि पर्व १६/५१/१८९३)

□□□

Pinku Pradhan

हरिवंश पुराण
(महाभारत का खिलभाग)

पिछले अध्यायों में हम उन समस्त प्रसंगों का विस्तार से वर्णन कर चुके हैं जहाँ-जहाँ कर्ण को कुन्ती का पुत्र बताने की बात की गई थी। उन समस्त बातों का विवेचन भी हम कर चुके हैं। वे स्थल कपोल-कल्पित और बहुत पहले की मिलावट है। महाभारत वर्णनों से ही हमारी बात की पुष्टि स्वतः हो जाती है।

हम अब तक जो सिद्ध करते रहे वह मात्र नकारात्मक था जैसे-

- कर्ण कुन्ती का पुत्र नहीं था।
- कर्ण सूर्यदेव का पुत्र नहीं था।
- कर्ण को कुन्ती ने दुर्वासा ऋषि के मंत्र से प्राप्त नहीं किया। कर्ण-कुन्ती का माता-पुत्र जैसा कोई सम्बन्ध नहीं था आदि-आदि।

सकारात्मक बात केवल इतनी थी कि कर्ण ने स्वयं

Pinku Pradhan

परशुराम जी के सामने ब्राह्मणी माता और क्षत्रिय पिता का पुत्र होना स्वीकार किया था, तथा कर्ण ने कुन्ती से भी परस्पर वार्तालाप के दौरान यही कहा था कि-

युद्ध ने मुझे भाइयों वाला बना दिया है।

परन्तु इतने से उलझन सुलझती तो नहीं है। वह मुख्य प्रश्न बराबर उठता रहता है कि आखिर कर्ण था कौन? वह यदि नदी में बहता हुआ नहीं आया था तो अधिरथ और राधा ने उसे पाल कैसे लिया?

दूसरा सवाल उठता है कि-

अगर कृष्ण ने रिश्वत ही देनी थी तो क्या कानीन कहे बिना रिश्वत नहीं दी जा सकती थी? जब तक इन प्रश्नों के सीधे-सीधे उत्तर नहीं मिलेंगे तब तक आपके मन में उथल-पुथल बनी ही रहेगी।

कर्ण का वंश वृक्ष

महाभारत के खिल भाग का नाम हरिवंश पुराण है। इस पुराण में हरि के वंश का अत्यन्त विस्तार से वर्णन किया गया है।

Pinku Pradhan

गीता प्रेस गोरखपुर से छपे हरिवंश पुराण के विष्णु खण्ड अध्याय ३१ के पृष्ठ १०८ पर एक वंशावली दी गई है, हम आपकी सेवा में वह वंशावली प्रस्तुत करते हैं। इसके पश्चात् स्थिति बिल्कुल स्पष्ट हो जाएगी।

पुरुवंश की परम्परा महाराज पुरु से आरम्भ करके इस प्रकार आगे बढ़ी है, देखिये-

पुरु से जन्मेजय। जनमेजय से प्रवीर+प्रवीर से मनस्यु। मनस्यु से अभयद। अभयद से सुधन्वा, सुन्धवा से बहुगव। बहुगव से शम्याति। शम्याति से रहस्याति! रहस्याति से रौद्राश्व।

रौद्राश्व से ऋचेयुः। ऋचेयुः से कक्षेयुः

ऋचेयु से कौरवों और पाण्डवों वाला कुल चला और दूसरी ओर कक्षेयुः से सभानर। सभानर से कालानल। कालानल से सृंजय। सृंजय से पुरंजय। पुरंजय से जन्मेजय। जन्मेजय से महाशाल। महाशाल से महामना।

महामना से उशीनर और तितीक्षु हुए।

उशीनर के नृग, कृमि, नव, सुव्रत और शिव हुए। शिव से भद्रक। भद्रक से विषदर्भ, सुवीर और कैकेय हुए।

उधर तितीक्षु से उषद्रथ। उषद्रथ से फेन। फेन से सुतपाद

Pinku Pradhan

और सुतपाद से बलि हुए।

बलि के दस पुत्रों में से पाँच तो अपने-अपने ही नाम वाले जनपदों के स्वामी हुए। अंग-बंग-सह्य-पुण्ड्र और कलिंग। अंग से दधिवाहन। दधिवाहन से दिविरथ। दिविरथ से धर्मरथ। धर्मरथ से चित्ररथ। चित्ररथ, से दशरथ। दशरथ से चतुरथ। चतुरथ से पृथुलाक्ष। पृथुलाक्ष से चम्प। चम्प से हर्यंग। हर्यंग से भद्ररथ। भद्ररथ से ब्रह्तकर्मा। ब्रह्तकर्मा से बृहन्मना हुए।

कर्ण का पिता विश्वजित

इससे आगे का समस्त वर्णन संस्कृत के मूल श्लोकों सहित निम्न प्रकार है-

बृहद्दर्भः सुतस्तस्य तस्माज्जज्ञे बृहन्मनाः।
बृहन्मनास्तु राजेन्द्र जनयामास वै सुतम्।।

(महाभारत आदि पर्व ३१/५२/१११)

नाम्ना जयद्रथं नाम यस्माद् दृढ़रथो नृपः।
आसीत् दृढरथस्यापि विश्वजिज्जन्मेजयः।।

(महाभारत आदि पर्व ३१/५३/१११)

बृहद्दर्भसुतो यस्तु राजानाम्ना बृहन्मना।
यस्य पत्नीद्वयं चासीच्चैद्यस्यैते सुते शुभे।

Pinku Pradhan

यशोदेवी च सत्या च ताभ्यां स्तुभिद्यते।।

(महाभारत आदि पर्व ३१/८८)

बृहत्कर्मा का जो पुत्र बृहन्मना था, उसकी दो पत्नियाँ थीं। ये दोनों ही चेदिराज की सुन्दर और प्रसिद्ध कन्याएं थीं। एक का नाम यशोदेवी था और दूसरी का सत्या।

उन दोनों के द्वारा उस वंश में भेद हो गया, अर्थात् दोनों की पृथक-पृथक वंश-परम्परा चली। यशोदेवी के गर्भ से जिसने जन्म लिया उसके पुत्र का नाम जयद्रथ हुआ।

हे राजेन्द्र! बृहन्मना ने जिस जयद्रथ को जन्म दिया, उससे दृढ़रथ की उत्पत्ति हुई।

हे जन्मेजय! उस दृढ़रथ का पुत्र **विश्वजित हुआ, विश्वजित का पुत्र कर्ण।** तथा कर्ण का पुत्र विकर्ण हुआ। विकर्ण के बहुत सारे पुत्र थे। (शतं) जो अंग वंश की वृद्धि करने वाले थे।

जयद्रथस्तु राजेन्द्र यशोदेव्यामजायत।

(महाभारत आदि पर्व ३१/५६/१११)

नाम्ना जयद्रथं नाम यस्माद् दृढरथो नृपः।।
आसीद् दृढरथस्यापि विश्वजिज्जन्मेजयः।।

(महाभारत आदि पर्व ३१/५३)

Pinku Pradhan

दायादस्तस्य कर्णस्तु विकर्णस्तस्य चात्मजः।
तस्य पुत्रशतं त्वासीदङ्गानां कुलवर्धनम्॥

(महाभारत आदि पर्व ३१/५४)

अधिरथ का वंश

बृहन्मना का दूसरा पुत्र जो सत्या से जन्मा था वह विजय शान्ति आदि गुणों में ब्राह्मणों से, और शौर्यादि क्षत्रियों के गुणों में क्षत्रियों से भी उत्कृष्ट था। विजय का पुत्र धृति। धृति का पुत्र धृतव्रत, धृतव्रत का पुत्र महायशस्वी सत्यकर्मा हुआ। सत्यकर्मा का पुत्र अधिरथ था जो सूत हुआ जिसने कर्ण को गोद लिया। इसलिए कर्ण को सूत-पुत्र कहते हैं। अधिरथ की माता ब्राह्मणी तथा पिता क्षत्रिय था।

ब्रह्मक्षत्रोत्तरः सत्यां विजयो नाम विश्रुतः।

(महाभारत आदि पर्व ३१-५६-१११)

विजयस्य धृतिः पुत्रस्तस्य पुत्रो धृतव्रतः॥
धृतव्रतस्य पुत्रस्तु सत्यकर्मा महायशाः॥

(महाभारत आदि पर्व ३१-५७-१११)

सत्यकर्म सुतश्चापि सूतस्तु अधिरथस्तु वै।
यः कर्णः प्रति जग्राह ततः कर्णस्तु सूतजः॥

(महाभारत आदि पर्व ३१-५८-१११)

Pinku Pradhan

राजन! यह सब मैंने महाबली कर्ण के विषय में कहा है। कर्ण का पुत्र विकर्ण और वृषसेन हुए और वृषसेन का पुत्र वृष कहा गया। ये समस्त राजा अंग वंश में हुए हैं। ये सत्यव्रती, महात्मा, महाबली, पुत्रवान् तथा महारथी थे।

एतत् ते कथितं सर्वम् कर्णम् प्रति महाबलं।
कर्णस्य वृषसेनस्तु वृषस्तस्यात्मजः स्मृतः॥

(महाभारत आदि पर्व ३१-५९-१११)

ऐतेऽङ्गवंशजाः सर्वे राजानः कीर्तिता मया।
सत्यव्रता महात्मनः प्रजावन्तो महारथाः॥

(महाभारत आदि पर्व ३१-६०-१११)

महाभारतकार ने कर्ण की उलझी हुई गुत्थी को यहाँ एकदम सुलझा दिया है। हरिवंश पुराण का यह अध्याय इसी स्थान पर समाप्त हो जाता है।

पाठक देखेगें कि पुराणकार ने जानबूझ कर बृहन्मना के बाद के वर्णन को अत्यन्त विस्तार से लिखा है कि कोई सन्देह न रह जाये और कर्ण के विषय में ध्यान रक्खा है कि पूरी जानकारी मिल जाये।

इससे पूर्व किस-किस राजा की कितनी-कितनी पत्नियाँ थीं? किस-किस के नए वंश चले, आदि-आदि के कहीं-कहीं

Pinku Pradhan

वर्णन हरिवंशपुराणकार ने दिए हैं परन्तु यहाँ पहुँच कर पुराणकार ने उस भेदक रेखा को स्पष्ट कर दिया है।

एक ही वृक्ष की उन दोनों शाखाओं को स्पष्ट दिखा दिया जिनमें से एक शाखा में कर्ण का जन्म हुआ और दूसरी शाखा में अधिरथ सूत जन्मा। उस अधिरथ ने जिसने कर्ण को गोद लिया।

अधिरथ के आगे विशेषण लगाया गया है। सत्यकर्मा को अधिरथ **'सूत'** पैदा हुआ। क्षत्रिय पिता और ब्राह्मणी माता की सन्तान का नाम **सूत** है। यहाँ पुराणकार स्पष्ट कर रहा है कि-

यदि सत्यकर्मा की पत्नी ब्राह्मणी न होकर क्षत्राणी ही होती तो उसे सूत न कहते।

नोट :- इसी श्लोक के उत्तरार्ध में कहा है इसीलिए कर्ण को **सूत-पुत्र** कहा जाता है, देखिये-

यः कर्णः प्रतिजग्राह ततः कर्णस्तु सूतजः।

(महाभारत आदि पर्व ३१-५८-१११)

Pinku Pradhan

किस कर्ण का वर्णन है

पाठकों को कोई भ्रम न हो जाये इसीलिए ग्रंथकार ने पुनः स्पष्ट किया कि **"यह समस्त वर्णन केवल अंग वंशजों का है।"** हे राजन्! यह सब वृतान्त मैंने तुम्हें महाबली कर्ण के विषय में कहा है।

एतत् ते कथितं सर्वं कर्णम् महाबलं

(महाभारत आदि पर्व ३१-५९-१११)

उपर्युक्त वर्णन से कई बातें स्पष्ट हो गई हैं-

(क) इन श्लोकों में महारथी कर्ण का ही वर्णन है जो अंगों का वंशज है।

(ख) दूसरी यह कि कर्ण को गोद लिया गया था। यहाँ शब्द आया है- **प्रतिजग्राह।**

कर्ण को किसी ने गोद दिया था और दूसरे ने गोद में ग्रहण किया था। यदि वह जल में बहता हुआ मिला होता तो **प्रतिजग्राह** शब्द का प्रयोग ही नहीं हो सकता था। अधिरथ ने उसे, शास्त्रानुकूल विधि से गोद लिया था।

Pinku Pradhan

माता-पिता व दद्यातां यमद्भिः पुत्रमायदि।
सदृशं प्रीति संयुक्तं स ज्ञेयो दत्त्रिमः सुतः॥

(मनुस्मृति अध्याय ९ श्लोक १६८)

मनु ने साफ शब्दों में लिखा है अर्थात् माता या पिता जिस सवर्ण पुत्र को देने वाले, आपातकालीन स्थिति में प्रेमपूर्वक और जल का संकल्प करके देते हैं (**दद्याताम्**) वह पुत्र दत्तक अर्थात गोद लिया हुआ जानना चाहिए।

अतः बात स्पष्ट हो गयी कि कर्ण को गोद लिया गया था, वह अधिरथ को पानी में बहता हुआ नहीं मिला था।

सदृशं तु प्रकुर्याद्यं गुण दोष विचक्षणम्।
पुत्रं पुत्र गुणैर्युक्तं स विज्ञेयश्च कृत्रिमः॥

(मनुस्मृति अध्याय ९ श्लोक १६९)

अर्थात्- गुण-दोषों को जानने वाले, पुत्रत्व के गुणों से युक्त सवर्ण पुत्र को कोई मनुष्य पुत्र मान लेवे, वह कृत्रिम पुत्र होता है।

दत्तक* पुत्र माता-पिता द्वारा दिया जाता है। सवर्ण हो,

---

*नोट :- मनुस्मृति के अध्याय ९ में श्लोक १६५ से २०० नं. तक के श्लोकों में इस विषय को विस्तार पूर्वक बताया गया है, पाठकगण वहां देख सकते हैं। -लाजपत राय अग्रवाल

Pinku Pradhan

पुत्रत्व के गुणों से युक्त हो, आपातकाल हो, देने वाला खुशी से दे, और जल का संकल्प करके दे।

जल में बह कर आने वाला माता-पिता द्वारा किसी को दिया नहीं जा सकता। जल में से बहता हुआ आया वह सवर्ण है? यह कैसे पता चलेगा? जल में से बहता हुआ मिले तो लेने वाले पर कोई आपत्ति ही आई हो अर्थात् वह सन्तानहीन हो, यह तो कोई ज़रूरी नहीं। देने वाला प्रसन्नता से कहाँ दे रहा है? उसे तो पता ही नहीं किससे लेना है, वह तो बहता हुआ जो आया है, पानी में तो भय से ग्रस्त होकर बहाया गया होगा।

मनु ने दत्तक के लिए आयु की, छोटे बड़े रिश्ते की, धनी और निर्धन की, कोई शर्त नहीं लगाई है। आप मनुस्मृति पढ़कर देख सकते हैं।

कुन्ती की कितनी सन्तानें थीं?

हरवंश पुराण में एक दूसरी भी वंशावली दी गई है उससे भी कर्ण कुन्ती का पुत्र सिद्ध नहीं होता, अतः इन जो इस वंशावलियों के पश्चात् किसी को यह नहीं कहना चाहिए कि- **कर्ण कुन्ती का पुत्र था, देखिये-**

Pinku Pradhan

पृथां दुहितरं चक्रे कुन्तीस्तां पाण्डुरावहत्।
यस्यां स धर्मविद्राजा धर्माज्जज्ञे युधिष्ठिरः॥

(हरिवंश पुराण ३४/२७-१२३)

भीमसेनस्तथा वातादिन्द्राच्चैव धनंजयः।
लोकेऽप्रतिरथो वीरः शक्रतुल्य पराक्रमः॥

(हरिवंश पुराण ३४-२८-१२३)

अर्थात् कुन्तीभोज की दुहिता पृथा के तीन पुत्र थे। धर्मराज से उत्पन्न युधिष्ठिर। वायु से जन्मे भीमसेन और इन्द्र द्वारा पैदा किए गए अनुपम वीर धनंजय अर्थात् अर्जुन। इस कुन्ती का विवाह पाण्डु से हुआ था।

यदि कुन्ती ने कर्ण को जन्म दिया होता तो वेदव्यास इस श्लोक में इतना और बढ़ाते- **और सूर्य से उत्पन्न महावीर कर्ण को जन्म दिया।**

कानीन पुत्र भी विवाहित स्त्री की ही सन्तान कहलाता है और यहाँ तो माता-जननी के कुल का वर्णन है, इसलिए यहाँ कर्ण का वर्णन न होना यह बताने के लिए पर्याप्त है कि- **कुन्ती ने कर्ण नाम की किसी सन्तान को जन्म नहीं दिया।**

□□□

Pinku Pradhan

कृष्ण ने कर्ण को कुन्ती पुत्र क्यों कहा?

गत अध्याय में यह सप्रमाण सिद्ध हो गया है कि-

कर्ण विश्वजित का पुत्र था और विश्वजित के ही परिवार के अधिरथ सूत ने उसे गोद ले लिया। वह बहता हुआ नदी से अधिरथ को नहीं मिला था।

अब आपके मन में यह प्रश्न उठ रहा होगा कि कृष्ण जी ने उसे क्यों कहा कि- **वह कुन्ती का पुत्र है?** यदि रिश्वत ही देनी थी तो क्या बिना कुन्ती का पुत्र बनाए उसे रिश्वत अर्थात् प्रलोभन नहीं दिया जा सकता था।

अब हम निवेदन करना चाहेंगे-

(क) हाँ! कर्ण को कुन्ती पुत्र बताए बिना कोई प्रलोभन या रिश्वत नहीं दी जा सकती थी। यह क्रूर अमानवीय कर्म, राजनीति अर्थात् कूटनीति की माँग थी।

आखिर को युद्ध था और युद्ध भी ऐसा-वैसा नहीं महाप्रलयकारी स्थिति बनी हुई थी, उस विषम परिस्थिति में

Pinku Pradhan

किसी भी शर्त पर कृष्ण उसे रोकना चाहते थे, परन्तु स्थिति बनने के बजाय बिगड़ती ही चली गई, और वातावरण ऐसा बन गया था कि एक से एक धुरन्धर योद्धा दोनों पक्षों के शिविरों में आकर एकत्रित हो गये थे।

हालत ये हो गयी थी कि यदि एक सहोदर भाई पाण्डवों के शिविर में था तो दूसरा कौरवों के साथ था सहदेव- नकुल का सगा मामा दुर्योधन के साथ ही नहीं मिल गया, अपितु उसकी सेना का सेनापति भी बना गया था।

युद्ध की तैयारी जिस बिन्दु पर पहुँच गई थी, वहाँ अब किसी समझौते या सहमति की कोई गुंजाइश बाकी नहीं रह गई थी।

अतः इस भयंकर स्थिति में जो कर्ण, कौन्तेय कह देने पर भी नहीं रीझा, वह कर्ण सौदेबाज़ी के लिए ही कैसे तैयार हो जाता?

(ख) कृष्ण ने तो मनोविज्ञान की अन्तिम सीमा पर हाथ रख दिया था। संसार में लोभ बड़ी पापी वस्तु है। अच्छे-अच्छे धर्मात्मा ऋषि-मुनि भी इसकी चपेट में आकर छिकड़ी भूल

Pinku Pradhan

जाते हैं, देखिये नीतिकार ने कहा भी है कि-

न निर्मिता केन न दृष्टपूर्वा न श्रूयते हेममयि कुरंगी।
तथापि तृष्णा रघुनन्दनस्य विनाशकाले विपरीत बुद्धिः॥

अर्थात् संसार जानता है कि परमात्मा ने सोने के हिरण नहीं बनाए, किसी ने कभी स्वर्ण मृग न देखे न सुने, परन्तु श्री राम जैसे मर्यादा पुरुषोत्तम कहलाने वाले भी लोभ में फँस गए।

किसी ने सच ही कहा है कि-

जब मनुष्य का विनाशकाल आता है तो बुद्धि स्वतः ही नष्ट हो जाती है। श्रीकृष्ण का सोचना था कि हो सकता है हस्तिनापुर के साम्राज्य का लोभ कर्ण के स्थिर पगों को कम्पायमान् कर दे, परन्तु वह लज्जा और संकोचवश चाहता हुआ भी हमारे साथ आने में झिझक महसूस करे। इसलिए कि कर्ण को फिसलने में दिक्कत न हो।

कृष्ण ने उस पर कौन्तेय कहने का मक्खन लगाया था कि समय आने पर ढिंढोरा पीटने का अवसर रह जायेगा कि कर्ण किसी लोभ-लालच या तृष्णा के कारण पाण्डवों से नहीं मिला, या गद्दी के लिए पाण्डव-शिविर में नहीं गया, वह तो स्वतः ही पाण्डव था, अर्थात् कौन्तेय था, इसलिए अपने अधिकार से शिविर में आया है।

Pinku Pradhan

आज से पूर्व उसे पता ही नहीं था कि उसकी माता कुन्ती है, वह मातृ-ऋण और पितृ-ऋण से उऋण होने के लिए प्रायश्चित स्वरूप पाण्डवों के साथ चला गया। इस प्रकार यदि कोई झिझक, छोटी-मोटी उलझन, कर्ण के मन में होती तो वह भी स्वतः ही दब जाती और कृष्ण का मनोरथ सफल हो जाता।

(ग) परन्तु इससे बड़ा कारण तो दूसरा था। कृष्ण यदि पाण्डवों से कहते कि तुम राज्य छोड़ दो और मुकुट कर्ण के सिर पर रख दो, या इस समझौते के स्वरूप को कृष्ण भीम, अर्जुन कुन्ती या विदुर किसी को भी समझाने का प्रयत्न करते तो कृष्ण का ऐसा अपमान होता कि जो कल्पना से परे है।

कृष्ण के विरुद्ध भीमसैन और अर्जुन गदा और गाण्डीव उठा कर खड़े हो गए होते और कुन्ती कृष्ण की भयंकर दुर्गति बनाती।

द्रौपदी अपने खुले केश कृष्ण के सामने जब लहराती तब एक अकल्पनीय ज्वालामुखी का विस्फोट होता। उसके सही रूप का वर्णन मैं नहीं कर सकता। सिर्फ इतना कह सकता हूँ कि पाण्डव उस समझौते के बजाय युद्धभूमि में एक-एक करके कट मरना कहीं ज्यादा अच्छा समझते।

Pinku Pradhan

अब सवाल पैदा होता है कि घर से उठने वाले इस विद्रोह को कैसे रोका जाता? कृष्ण ने कर्ण को कौन्तेय कह कर भविष्य के गर्भ में पलने वाले वो सारे विद्रोह शमन कर दिए थे।

जब माता कुन्ती नीची गर्दन करके अपने बच्चों से कहती कि- कर्ण तुम्हारा जेठा भाई है, मैं लज्जावश तुम्हें बता नहीं सकी और अब युद्ध सिर पर आ जाने के कारण मेरे मन ने विद्रोह कर दिया, कि-

मेरे बच्चों के हाथ से अपने जेठे भाई की हत्या जैसा पाप न हो जाये तो मैंने लज्जा छोड़ कर कृष्ण और विदुर की सलाह लेकर वास्तविकता तुम लोगों पर प्रकट कर दी है और इस पर जब कृष्ण गिरह लगाते कि-

हमने आज तक अनजाने में कर्ण का बड़ा अनादर किया है, उसकी अवहेलना की है, उसका प्रायश्चित कैसे किया जायेगा? और तब युधिष्ठिर-सरीखा धर्मात्मा स्वयं प्रायश्चित स्वरूप राजमुकुट कर्ण के सिर पर चढ़ा देता।

(घ) यही कारण था कि कृष्ण ने, कुन्ती ने, या विदुर ने कानीन की बात कर्ण से तो कह दी परन्तु पाण्डवों को कर्ण के मरने तक भी न बताया कि वह कुन्ती का कानीन पुत्र है।

Pinku Pradhan

सौदा पट जाता तो कृष्ण या कुन्ती को पाण्डवों का भाई बता देते। और यह भी सम्भव है कि पाण्डवों को यह सब कुछ पता लगने तक चाणक्य द्वारा मुद्राराक्षस की कोई विष-कन्या या तोरणद्वार गिरने की कथा की रिहर्सल हो जाती और कर्ण को कब मार दिया जाता, इस बात का किसी को कानोकान पता भी न चलता।

कृष्ण की राजनैतिक सूझ-बूझ का यह एक अनुपम अध्याय है। कृष्ण का मानवता को विनाश से बचाने का एक साहसिक और निष्ठुर प्रयास है। युद्ध में विजय की अनिश्चितता को निश्चितता में बदलने का एक अनूठा चातुर्य भरा प्रयास भी है।

जिस प्रकार द्रोणाचार्य के वध के लिए एक नकली अश्वत्थामा तलाशा गया था, ठीक वैसे ही कर्ण के पर काटने के लिए उसे कुन्ती का नकली पुत्र भी बनाया जा रहा था।

Pinku Pradhan

श्राद्ध-वर्णन

जलदान

वास्तव में तो कर्ण का यह प्रसंग उसकी मृत्यु के साथ ही समाप्त हो गया था परन्तु पीछे भारतीय इतिहास में एक ऐसा समय आया जब ग्रंथों में मिलावटें की गई। यह मिलावटें किसने की होंगी, इसका कुछ कुछ अनुमान तो हमें है।

यह मिलावट उन लोगों ने की जो यह कहते हैं कि कृष्ण नरक में गया। ये मिलावट वे लोग कर सकते हैं जो श्री राम को नरक में गया हुआ बताते हैं। ये मिलावट करने वाले वे हैं जिन्हें वैदिक धर्म के इस पावन पवित्र इतिहास के किसी भी पावन चरित्र पर कीचड़ उछालना ही जिनका मुख्य उद्देश्य था क्योंकि कीचड़ उछाले बिना उनकी अपनी दुकानदारी चलने वाली नहीं थी। चाहे कुन्ती का चरित्र हो, या चाहे द्रोपदी का या सीता का, चाहे कृष्ण का हो या बलराम का! प्रत्येक पर कीचड़ उछाला गया और जम कर उछाला गया।

इन्हीं लोगों ने सती साध्वी कुन्ती के चरित्र को भी नष्ट

Pinku Pradhan

करने के लिए कर्ण की मृत्यु के पश्चात् वाले प्रसंग में मिलावटें की हैं और इस मिलावट को सत्य इतिहास सिद्ध करने के लिए जहाँ-जहाँ स्थान मिला वे लोग उनमें मिलावटें करते गए। और अब तो स्थिति ये आ गई है कि हम राम और कृष्ण के भक्त स्वयं उसे मिलावट न मान कर, सिर्फ उसे ही सत्य मानने लगे हैं, और उसका प्रतिपादन भी करने लगे हैं।

कर्ण कुन्ती का पुत्र था इस बात का वर्णन महाभारत के उद्योग पर्व में पहली बार हुआ है परन्तु वह सारी बात तो एकदम गुप्त थी। न कृष्ण ने, न कुन्ती ने और ना ही कर्ण ने ही किसी को बताई। उसके पश्चात् कर्ण की मृत्यु के पश्चात् स्त्री पर्व में यह प्रसंग तब आया जब कुन्ती ने युधिष्ठिर से कहा कि उस कर्ण को भी जलांजलि दे दो, वह मेरा कानीन पुत्र, अर्थात् तुम्हारा जेठा भाई था।

हमारा निवेदन है कि-

महाभारत-काल तक मृतक श्राद्ध का प्रचलन ही आरम्भ नहीं हुआ था। इस वास्ते श्राद्ध का प्रसंग बना कर वर्णित सारे कपोलकल्पित और बहुत पूर्व काल की एवं कुछ बौद्धकाल की, मिलावटें इतिहास में मौजूद हैं।

देखिये, हम अपनी तद्विषयक बात को महाभारत से ही

Pinku Pradhan

प्रारम्भ करते हैं-

महाराज युधिष्ठिर ने भीष्म पितामह से प्रश्न किया कि- हे पितामह! यह मृतक श्राद्ध इस संसार में कब और किसने आरम्भ किया?

भीष्म पितामह बोले-

हे युधिष्ठिर! एक समय राजा दत्तात्रेय निमि का एक श्रीमान् नाम का पुत्र मर गया। राजा को उस पुत्र से बहुत मोह था। उसने उसके मरने का बहुत कष्ट माना। उसने अमावस्या के दिन ब्राह्मणों को भोजन कराया और तब अपना तथा अपने पुत्र का गोत्र उच्चारणपूर्वक नाम लेकर पिण्ड-दान भी किया। सब कुछ कर चुकने के पश्चात् जब राजा निमि पुत्र-शोक से उभरे तो वे अपने कृत्य से भयभीत हो उठे कि मैंने ऐसा कार्य कर डाला जिसे किसी ऋषि मुनि ने मुझसे पूर्व कभी किया ही नहीं था। मुझे विद्वान् ब्राह्मण लोग शाप देकर भस्म कर डालेंगे।

अकृतं मुनिभिः पूर्वम् किं मयेदमनुष्ठितम्।
कथं नु शापेन न माम् दहेयुर्ब्राह्मणाः इति॥

(महाभारत आदि पर्व अनुवाद ९१/१७)

लगभग यही वर्णन कुछ शब्दों के अन्तर के साथ ज्यों का त्यों वराह पुराण अध्याय १८७ श्लोक ७५ से ७७ में हुआ

Pinku Pradhan

है, देखिये-

शोकस्य तु प्रभावेण एतत्कर्म कृतं मया।
अनार्य जुष्ठमस्वर्गामकीर्तिकरणं द्विज।।

(महाभारत अनुवाद १८७/७५)

नष्ट स्मृति सत्वो ज्ञानेन विमोहितः।
न च मया श्रुतपूर्वम् न देवै ऋषिभिः कृतम्।।

(महाभारत, अनुवाद १८७/७६)

भयं तीव्रं पश्यामि मुनिपात्सुदारुणम्।

(महाभारत, अनुवाद १८७-७७)

निमि महाराज भयभीत होकर अपनी गाथा मुनिराज को सुना रहे हैं। कि हाय! शोक के प्रभाव से एक ऐसा कर्म मैंने कैसे कर डाला जो अनार्यों की नकल है, आर्य जिस कार्य को नहीं करते, जो द्विजों को दुःख का कारण और अपयश को देने वाला है।

मेरी स्मृति नष्ट हो गई थी। मेरी बुद्धि भ्रमित हो गई थी कि जो ऐसा कार्य मैंने कर दिया, जिसे देवों या ऋषियों ने कभी पहले किया ही नहीं था। अवश्य मुनि लोग मुझे शाप दे डालेंगे।

यहाँ हमारा ध्येय मृतक श्राद्ध का खण्डन या मण्डन

Pinku Pradhan

करना नहीं है। उसे उचित या अनुचित बताना भी नहीं है। हम तो यहाँ केवल यह जानने का प्रयत्न कर रहे हैं। कि महाभारत-काल में श्राद्ध-व्यवस्था प्रचलित भी थी या नहीं?

उक्त विवरण से एक बात तो यह पता चलती है कि राजा निमि से पूर्व भारत के लोग मृतक श्राद्ध नहीं करते थे।

दूसरी बात यह पता चली कि राजा निमि ने भी किसी शास्त्र या वेद के आदेश से श्राद्ध कर्म नहीं किया था। वह उस समय पुत्र-शोक से दुखी था और उसी मोह में एक ऐसा कर्म कर डाला जिसे आर्य लोग नहीं करते थे, अपितु वह अनार्यों की जूठन थी। तीसरी बात यह पता चली कि इस अकरणीय कार्य के कारण ब्राह्मण लोग राजा को शाप भी दे सकते थे।

चौथी बात यह देखी गई कि श्राद्ध-कर्म का प्रचलन अभी इतना ताज़ा नहीं हुआ था कि भीष्म पितामह ने उसका उत्तर ऐसे दिया जैसे कोई प्रत्यक्षदर्शी देता है।

तो फिर अब सवाल पैदा होता है कि यह मृतक श्राद्ध कालान्तर में कब और कैसे आरम्भ हुआ होगा?

सम्पादक की ओर से विशेष टिप्पणी-

मृतक श्राद्ध पर अनेकों महत्त्वपूर्ण छोटी-बड़ी पुस्तकें जो

Pinku Pradhan

विभिन्न लेखकों द्वारा लिखी गई हैं जिनका प्रकाशन हमारे यहां से हुआ है, आपसे प्रार्थना है कि प्रकाशन से बृहद सूची पत्र मंगाये या हमारी वेबसाईड जो पुस्तक में दी गयी है उससे डाऊन लोड करें तभी अपनी मन पसन्द पुस्तकें मंगा सकते हैं।

मृतक श्राद्ध की वास्तविकता क्या है? करना चाहिये या नहीं? इस विषय पर कालान्तर में अनेकों शास्त्रार्थ भी हुए हैं। एक शास्त्रार्थ पर तो आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी जर्मन से आया हुआ प्रोफेसर मैक्सूमूलर का निर्णय भी मौजूद है। इन शास्त्रार्थों के संग्रह का नाम-**निर्णय के तट पर** है जिसके पाँच भाग प्रकाशित हो चुके हैं। छटा भाग भी अति शीघ्र छप कर आने वाला है। अत्यन्त महत्वपूर्ण व पठनीय पुस्तक है। अवश्य ही मंगवा कर पढ़ें, जिसके द्वारा अनेकों विभिन्न विषयों की समस्याओं का समाधान स्वतः ही हो जाता है।

निवेदक :

लाजपत राय अग्रवाल

(वैदिक मिशनरी)

संस्कृत के प्रौढ़ विद्वान् स्व. शिवशंकर जी 'काव्यतीर्थ' ने अपनी महत्वपूर्ण पुस्तक- 'श्राद्ध निर्णय* में लिखा है कि-

बौद्धकाल में, बौद्धमत का चीन, जापान और भारत में

Pinku Pradhan

बड़ा विस्तार हुआ। चीन के लोगों में मृतक श्राद्ध, पशु-हिंसा, मांस-भक्षण का बहुत प्रचलन था। वे ही भारत में स्थित अपने मान्य बोध गया तीर्थ नामक स्थान में अपने मृत पितरों के नाम पर जो कुछ बलि कर दी जाये वह मृतक को दूसरे लोक में पहुँच जाती है। इसी भावना से प्रेरित होकर प्रति वर्ष नाना प्रकार के भोज्य पदार्थ और कागजों के घोड़े-हाथी, बैल आदि मृत पितरों के नाम से जलाते तथा जीवित दास दासियों तक को मार कर उनकी बलि देते थे।

शमशान में मृतकों के नाम पर उनकी यादगार में सुन्दर-सुन्दर चबूतरे बनवाते और प्रतिवर्ष उनके निमित्त महोत्सव भी करते थे। यही लोग सब भूत, प्रेत, पिशाच आदि को भी मानते थे तथा अपनी अज्ञानता के कारण जीवन में आये हुए सभी दु:खों के होने का एकमेव कारण उन मृत पितरों को ही मानते थे।

इसलिए ये बौद्ध चीनी लोग अपने मृतक पितरों को खुश करने हेतु उनके निमित्त बड़ी धूमधाम से गया भारत में नामक स्थान पर आकर उत्सव करते थे। यह प्रसिद्ध स्थान भारत के बिहार नामक प्रान्त में स्थित है।

यहाँ के स्थानीय बौद्ध लोगों ने चीनी लोगों की इस प्रथा

Pinku Pradhan

को. अतिथि के सम्मान स्वरूप या वित्तेष्णा से ग्रसित होकर स्वत: ही मान लिया।

भारत के पौराणिक पण्डों ने भी बौद्ध पण्डों को मालामाल होते हुए देखकर इस प्रचलित अवैदिक श्राद्ध प्रथा का स्वयं अनुकरण किया तथा सब प्राचीन ग्रंथों में भी किसी न किसी बहाने से इस मृतक श्राद्ध के प्रकरण को खूब बढ़ा-चढ़ा कर उसके महत्व को दर्शाते हुए तथा न करने पर अनेकों तरह का भय बताते हुए मिला दिया एवं यहां के निवासियों अर्थात् भारतीयों को मृतक-पूजक बना दिया।

(श्राद्ध निर्णय पृष्ठ १३१-१३२)

इसकी पुष्टि इस बात से भी हो जाती है कि श्राद्ध में पिण्ड जौ के आटे और चावल के दिए जाते हैं जो यह सिद्ध करता है कि इस प्रथा का जन्म देश के उस भाग से हुआ होगा जहाँ जौ और चावल के सत्तू बनाकर खाए जाने का प्रचलन होगा।

बोध गया (बिहार) भी भारत में एक ऐसा ही स्थान है जहाँ जौ और चावल का सत्तू और उसके पिण्ड आज भी वर्ष भर खाए जाते हैं। सम्भवत: इसी कारण गरुड़ पुराण ने भी गया में श्राद्ध करने से स्वर्गवासी पितरों की मुक्ति मान ली है।

Pinku Pradhan

चीन से आयातित होने के कारण ही श्राद्ध का विधान करने वाले ग्रन्थों के अन्दर श्राद्ध में मांस खाने-खिलाने का खुलकर समर्थन किया गया है। हम स्थानाभाव के कारण माँस के उस विधान की व्याख्या नहीं कर रहे। अन्यथा उन पवित्र पशुओं के माँस, जिसको छूना तो दूर, हम देखना भी पाप समझते हैं श्रांद्ध में उन सबका मांस खाने और खिलाने का विधान* विस्तार से मौजूद है। ये विदेशी उन्हीं चीनी मांस भक्षी बौद्ध भिक्षुओं के प्रभाव का ठोस प्रमाण है।

श्राद्ध के विषय में महाभारत की अपनी राय देखिए-

न कर्मणा पितुः पिता वा पुत्र कर्मणा।
मार्गेणान्येन गच्छन्ति बद्धाः सुकृत दुष्कृतैः॥

(महाभारत शान्ति पर्व १५३/३८)

यथा धेनुसहस्रेषु वत्सो विन्दति मातरम्।
तथा पूर्वकृतं कर्म कर्त्तारमनुगच्छति॥

(महाभारत शांति पर्व १८१/१६)

पिता के कर्म से पुत्र, तथा पुत्र के कर्म से पिता नहीं

*जीवित पितर - कौन कहता है पितर मरे हुए होते हैं?
मृत्क श्राद्ध खण्डन, मृतक श्राद्ध पर 21 प्रश्न आदि-2 अनेकों पुस्तकें हमारे यहां से प्रकाशित की गई हैं, आप प्रकाशन से सम्पर्क कर मंगा सकते हैं।
निवेदक : लाजपत राय अग्रवाल (वैदिक मिशनरी)

Pinku Pradhan

तरता। अपने किए हुए पापों या पुण्यों से बँधे हुए कर्मों के अनुसार, जैसे हज़ारों गायों में बछड़ा अपनी माता को ढूंढ लेता है, वैसे ही पूर्व किया गया कर्म भी अवश्य ही कर्त्ता को ढूंढ लेता है। अर्थात् कर्त्ता को कृत कर्मों का फल अवश्य ही भोगना पड़ता है।

देखिए शास्त्र का वचन है कि–

'अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्'

अर्थात्–शुभ या अशुभ कैसे भी कर्म हों, उनका फल कर्त्ता को अवश्य ही भोगना पड़ता है, ऐसा शास्त्र का वचन है।

अतः ऊपर दिए गए समस्त वर्णन से यह सिद्ध होता है कि–

मृतक श्राद्ध का प्रचलन इस देश में बौद्ध धर्म के जन्म के पश्चात हुआ अर्थात् कम से कम महाभारत युद्ध समाप्त हो जाने के डेढ़ हज़ार वर्ष पश्चात्। ऐसी अवस्था में महाभारत-वर्णित वह समस्त वर्णन, जिनमें कर्ण को जलांजलि देने को कहा गया है, काल्पनिक और बहुत काल पीछे की मिलावट साबित होती है। जब श्राद्ध का वर्णन ही मिलावटी है तो वह सारी वाक्यावली जो कुन्ती या युधिष्ठिर के मुख से इसलिए कहलवाई गई है कि **कर्ण को कुन्ती का पुत्र सिद्ध किया जा सके,** जो स्वयं बेमायनी और निरर्थक सिद्ध है। अतः हर दृष्टि से सिद्ध है कि–

कर्ण कुन्ती का पुत्र नहीं था।

॥ समाप्त ॥